दिल्ली-एनसीआर में 35 किमी प्रति घंटे की रफ्तार से चलेगी हवा, महसूस होगी हल्की ठंड; 9 मार्च को बादल देंगे दस्तक

नई दिल्ली। दिल्ली-एनसीआर में आने वाले पांच दिनों तक मौसम मुख्य रूप से साफ रहने का अनुमान है। मौसम विभाग के जिला-वार पूर्वानुमान के अनुसार 5 से 9 मार्च के बीच दिल्ली के अधिकांश हिस्सों में आसमान साफ रहेगा, जबकि 9 मार्च को आंशिक रूप से बादल छाने की संभावना है। मौसम विभाग के अनुसार इस अवधि में दिल्ली के उत्तर, उत्तर-पूर्व, उत्तर-पश्चिम, पश्चिम, दक्षिण, दक्षिण-पश्चिम, दक्षिण-पूर्व, मध्य और पूर्वी जिलों के साथ ही नई दिल्ली क्षेत्र में भी लगभग समान मौसम रहने की संभावना है। दिन के समय 15 से 25 किलोमीटर प्रति घंटे की रफ्तार से सतही हवाएं चलेंगी.

बहुजन हिताय! बहुजन सुखाय!

सक्षम भारत

राष्ट्रीय हिन्दी दैनिक | इन्द्रजीत सिंह, मुख्य संवाददाता/सचिव, CNSI-Delhi

दिल्ली, हरियाणा, पंजाब, राजस्थान, उत्तर प्रदेश से प्रसारित

www.sakshambharat;net, E-mail : saksham.bharat@hotmail.com

Member : CENTRAL NEWSPAPER SOCIETY OF INDIA DELHI

● वर्ष: 24 ● अंक: 131 ● नई दिल्ली ● शुक्रवार 06 मार्च 2026 ● प्रभात कालीन ● मूल्य: 3 रूपया ● पृष्ठ: 4

रिपब्लिकन मजदूर संगठन के सदस्य बनें

E-mail : rmsdp@hotmail.com

अनागरिक गीता भारती भवन

बी-2/370, सुल्तानपुरी

दिल्ली-86

कनॉट प्लेस में खिला बसंत - सीएम रेखा गुप्ता ने किया भव्य पुष्प महोत्सव का उद्घाटन, उमड़ी दिल्ली वालों की भीड़

नई दिल्ली। नई दिल्ली का सेंट्रल पार्क इन दिनों रंगों और खुशबुओं से गुलजार है। नई दिल्ली नगरपालिका परिषद द्वारा आयोजित चार दिवसीय पुष्प महोत्सव का उद्घाटन दिल्ली की मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता ने किया। इस आयोजन में 15,500 से अधिक गमलों में 48 अलग-अलग किस्म के फूल सजाए गए हैं, जिससे पार्क एक जीवंत और रंग-बिरंगे फ्लोरल गैलरी में बदल गया है। उद्घाटन समारोह में पालिका परिषद के अध्यक्ष केशव चंद्रा, उपाध्यक्ष कुलजीत सिंह चहल, सदस्य अनिल वाल्मीकि और सचिव राहुल सिंह भी मौजूद रहे। उद्घाटन के साथ ही पार्क में मौजूद लोग फूलों की रंगीन छटा और खुशबू का आनंद लेने लगे।

ट्यूलिप अब दिल्ली में

मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता ने कहा कि पहले ट्यूलिप देखने के लिए दिल्लीवासियों को कश्मीर जाना पड़ता था, लेकिन अब एनडीएमसी हर साल राजधानी में ही ट्यूलिप की बहार लाता है। उन्होंने बताया कि यह महोत्सव अब सेल्फी फेस्टिवल का रूप ले चुका है, जहां लोग फूलों के बीच फोटो खिंचवाकर यादगार पल बना रहे हैं। मुख्यमंत्री ने फाल्गुन महीने के महत्व पर भी बात की और कहा कि यह महीना रंगों और उमंग का प्रतीक है। उन्होंने बागवानी विभाग के कर्मचारियों की मेहनत की सराहना करते हुए कहा कि उनकी कोशिशों से सेंट्रल पार्क में हर कोना फूलों से महक उठा है।

परंपरा और आधुनिकता का संगम

पालिका परिषद के अध्यक्ष केशव चंद्रा ने बताया कि फाल्गुन और होली के अवसर पर राजधानी को फूलों से सजाना एनडीएमसी की पुरानी परंपरा है। बागवानी विभाग के कर्मचारी महीनों की तैयारी के बाद यह महोत्सव आयोजित करते हैं। उपाध्यक्ष कुलजीत सिंह चहल ने कहा कि जी-20 और हालिया एआई समिट जैसे बड़े आयोजन के दौरान नई दिल्ली की सजावट ने विदेशी मेहमानों को भी प्रभावित किया।

महोत्सव की विशेषताएं

इस पुष्प महोत्सव में 18 अलग-अलग सेक्शन बनाए गए हैं, जिनमें 15,500 से अधिक गमलों में डहलिया, पेटुनिया, पैंसी, साल्विया और मैरीगोल्ड जैसे मौसमी फूल सजाए गए हैं। फूलों से बने जानवरों और पक्षियों के आकार, ट्रे गार्डन, बड़े हैंगिंग बास्केट, टेरारियम और ईस्टर्न-वेस्टर्न स्टाइल की सजावट दर्शकों के लिए आकर्षण का केंद्र बने हैं।

सेल्फी पॉइंट और म्यूजिकल फाउंटेन

पार्क में पिरामिड, हार्ट शेप और सिलिंड्रिकल फ्लोरल स्ट्रक्चर जैसे आकर्षक सेल्फी पॉइंट बनाए गए हैं। शाम के समय रंगीन रोशनी के साथ म्यूजिकल फाउंटेन पूरे माहौल को और मनमोहक बना देता है। पार्क का हर कोना बसंती उत्सव का एहसास कराता है।

बागवानी प्रेमियों के लिए विशेष

महोत्सव में नर्सरी प्लांट्स, बोनसाई, हाइड्रोपोनिक्स, कैक्टस-सक्यूलेंट और हर्बल पौधे के स्टॉल लगाए गए हैं। आगंतुक बीज, गमले, फर्टिलाइजर और सजावटी सामग्री भी खरीद सकते हैं। इस तरह यह महोत्सव न सिर्फ देखने के लिए, बल्कि बागवानी के शौकीनों के लिए भी उपयोगी है।

आम जनता के लिए खुला

चार दिवसीय पुष्प महोत्सव 6 मार्च तक आम जनता के लिए खुला रहेगा। प्रवेश निःशुल्क है। एनडीएमसी ने लोगों से अपील की है कि वे परिवार और मित्रों के साथ आकर फूलों की खूबसूरती और खुशबू का आनंद लें और बसंती मौसम का स्वागत करें।

सीएम रेखा ने कश्मीरी गेट के पास नए फुट ओवर ब्रिज की नींव रखी, पैदल यात्रियों को मिलेगी सुविधा

नई दिल्ली। दिल्ली की मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता ने गुरुवार को अंतरराज्यीय बस टर्मिनल (आईएसबीटी) के मठ बाजार में नए फुट ओवरब्रिज की आधारशिला रखी। मुख्यमंत्री के अनुसार, इस सुविधा को साल के अंत तक चालू करने के लिए निर्माण कार्य समयसीमा का सख्ती से पालन किया जाएगा। मीडिया से बात करते हुए दिल्ली की मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता ने कहा कि यहां के लोगों ने पिछली सरकार से सैकड़ों बार यह मांग की थी। आज, हमारी सरकार के कम समय के कार्यकाल में ही, हम यहां के लोगों की इस मांग को पूरा करने जा रहे हैं... बहुत जल्द, सिर्फ 6 महीनों में, यह पुल बनकर तैयार हो जाएगा। इससे पहले, मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता ने सोमवार को सशक्त नारी, समृद्ध दिल्ली कार्यक्रम में कई महिला-केंद्रित पहलों का शुभारंभ किया, जिनमें राशन कार्ड धारकों के लिए मुफ्त एलपीजी सिलेंडर योजना और दिल्ली लखपति बिटिया योजना शामिल हैं। शिक्षा, गतिशीलता और घरेलू सशक्तिकरण पर जोर देते हुए, उन्होंने घोषणा की कि लाडली-लाडली योजना के तहत 30,000 लड़कियों के लिए धनराशि डीबीटी के माध्यम से वितरित कर दी गई है। इससे पहले फरवरी में, दिल्ली की मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता ने राष्ट्रीय राजधानी में एक आधुनिक इलेक्ट्रिक डबल-डेकर बस को हरी झंडी दिखाकर रवाना किया था। इसका उद्देश्य शहर के पर्यटन क्षेत्र को मजबूत करना और पर्यटकों को एक अनूठा यात्रा अनुभव प्रदान करना है। मुख्यमंत्री के अनुसार, यह बस दिल्ली के सांस्कृतिक, ऐतिहासिक और धरोहर स्थलों को कवर करने वाले एक निश्चित पर्यटन सर्किट पर चलेगी। उद्घाटन मार्ग शहीद स्मारक से शुरू होता है और इसमें प्रधानमंत्री संग्रहालय जैसे स्थान शामिल हैं। उन्होंने कहा कि हम एक नया पर्यटन मार्ग विकसित कर रहे हैं ताकि हमारे पर्यटक प्रधानमंत्री संग्रहालय जैसे स्थानों का भ्रमण कर सकें... इन बसों के लिए पहले से बुकिंग संभव होगी और पर्यटक एक शानदार अनुभव प्राप्त कर सकेंगे। गुप्ता ने पर्यटन विभाग को बधाई दी और राजधानी के विकास के लिए सरकार की प्रतिबद्धता को दोहराया। उन्होंने आगे कहा कि दिल्ली सरकार हर दिन दिल्ली के लिए एक नया उपहार, एक नई पेशकश लेकर आती है। एक साल पूरा हो चुका है और अभी बहुत कुछ करना बाकी है। हम एक विकसित दिल्ली की दिशा में निरंतर आगे बढ़ते रहेंगे।

पीएम मोदी और फिनलैंड के राष्ट्रपति अलेक्जेंडर स्टब के बीच हैदराबाद हाउस में हुई खास मुलाकात

नई दिल्ली। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने गुरुवार, 5 मार्च 2026 को नई दिल्ली के हैदराबाद हाउस में फिनलैंड के राष्ट्रपति अलेक्जेंडर स्टब के साथ द्विपक्षीय चर्चा की। इस बैठक का मुख्य उद्देश्य दोनों देशों के बीच संबंधों को एक नई ऊंचाई पर ले जाना और विभिन्न क्षेत्रों में सहयोग के नए रास्ते खोलना था। विदेश मंत्रालय के अनुसार, दोनों नेताओं ने बहुआयामी क्षेत्रों में द्विपक्षीय सहयोग को बढ़ाने के लिए विस्तृत बातचीत की। इस चर्चा में क्षेत्रीय और वैश्विक चिंता के मुद्दों के साथ-साथ बहुपक्षीय मंचों पर आपसी तालमेल को लेकर भी विचार साझा किए गए। द्विपक्षीय बैठक के बाद, पीएम मोदी ने राष्ट्रपति स्टब के सम्मान में दोपहर के भोजन की मेजबानी की। प्रधानमंत्री से मिलने से पहले, विदेश मंत्री डॉ. एस. जयशंकर ने राष्ट्रपति स्टब से मुलाकात की।

उन्होंने आगामी रायसीना डायलॉग में राष्ट्रपति के संबोधन के प्रति उत्साह व्यक्त किया। इससे पूर्व, फिनिश राष्ट्रपति ने राजघाट जाकर महात्मा गांधी को पुष्पांजलि अर्पित कर अपनी श्रद्धांजलि दी। राष्ट्रपति अलेक्जेंडर स्टब प्रधानमंत्री मोदी के निमंत्रण पर बुधवार को भारत पहुंचे। यह पद संभालने के बाद उनका पहला भारत दौरा है। उनके साथ एक उच्च स्तरीय प्रतिनिधिमंडल भी आया है, जिसमें प्रमुख मंत्री, वरिष्ठ अधिकारी और दिग्गज व्यापारिक नेता शामिल हैं। राष्ट्रपति स्टब दिल्ली में चल रहे इस 11वें संस्करण के मुख्य अतिथि हैं और वह यहाँ कीनोट एड्रेस देंगे। वे राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू और उपराष्ट्रपति सी. पी. राधाकृष्णन से भी शिष्टाचार भेंट करेंगे। दिल्ली के कार्यक्रमों के बाद, राष्ट्रपति मुंबई जाएंगे। वहाँ वे महाराष्ट्र के राज्यपाल आचार्य देवव्रत और मुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस से मिलेंगे। साथ ही, मुंबई विश्वविद्यालय में छात्रों को संबोधित करेंगे और एक व्यापारिक कार्यक्रम में हिस्सा लेंगे। भारत और फिनलैंड के बीच संबंध साझा लोकतांत्रिक मूल्यों पर आधारित हैं। हाल ही में फरवरी 2026 में फिनलैंड के प्रधानमंत्री पेटेरी ओर्पो के भारत दौरे के बाद, राष्ट्रपति स्टब की यह यात्रा दर्शाती है कि दोनों देश आपसी सहयोग और जन-जन के बीच जुड़ाव को और गहरा करने के लिए कितने प्रतिबद्ध हैं।

दिल्ली में 15 घंटे में आग की 4 बड़ी घटनाएं, 3 की मौत और करोड़ों का नुकसान; कई घंटों तक जूझी फायर ब्रिगेड

नई दिल्ली।

राजधानी दिल्ली में पिछले करीब 15 घंटों के भीतर आग लगने की चार बड़ी घटनाओं ने एक बार फिर शहर की फायर सेफ्टी व्यवस्था पर सवाल खड़े कर दिए हैं। उत्तरी दिल्ली के व्यस्त कारोबारी इलाके सदर बाजार में पहली घटना हुई, जिसके बाद रिठाला, महिपालपुर और मेहरौली-बदरपुर रोड पर भी आग की घटनाएं समाने आईं। इन हादसों में अब तक तीन लोगों की मौत हो चुकी है, जबकि कई लोगों का सामान और संपत्ति जलकर राख हो गई। उत्तरी दिल्ली के Sadar Bazar स्थित बारा टूटी चौक के पास बुधवार शाम चार मंजिला इमारत में भीषण आग लग गई। शुरुआती जांच में आग लगने की वजह शॉर्ट सर्किट बताई जा रही है, जिसके बाद चौथी मंजिल पर रखे प्लास्टिक के खिलौनों में आग फैल गई। करीब 20 दमकल गाड़ियों ने मौके पर पहुंचकर आग बुझाने का काम शुरू किया। कई घंटों की मशक्कत के बाद आग पर काबू पाया गया, लेकिन इमारत की तलाशी के दौरान दो जले हुए शव बरामद हुए। आशंका है कि इमारत में काम करने वाले श्रमिक वहां रहते भी थे। घटना के दौरान मौके पर भीड़ उग्र हो गई और

दमकलकर्मियों पर पथराव कर दिया, जिसमें दो पुलिसकर्मी घायल हो गए और दमकल की एक गाड़ी का शीशा टूट गया।

रिठाला मेट्रो के पास झुग्गियों में आग, 100 से यादा झोपड़ियां जलीं

दूसरी घटना उत्तर-पश्चिम दिल्ली के Rithala Metro Station के पास हुई, जहां देर रात झुग्गियों में आग लग गई। देखते ही देखते आग ने विकराल रूप ले लिया और 100 से अधिक झुग्गियां जलकर राख हो गईं। दमकल विभाग की 20 से अधिक गाड़ियों ने करीब छह घंटे की मशक्कत के बाद आग पर काबू पाया। इस हादसे में एक युवती की मौत हो गई। आग लगने के कारणों की जांच की जा रही है। तीसरी घटना दक्षिण-पश्चिम दिल्ली के Mahipalpur इलाके के रंगपुरी में सामने आई, जहां कपड़ों के एक वेयरहाउस में आग लग गई। यह गोदाम विभिन्न स्थानों पर कपड़ों का सामान भेजने के लिए इस्तेमाल किया जाता था। सुबह करीब 10:20 बजे आग लगने की सूचना दमकल विभाग को मिली, जिसके बाद 9 दमकल गाड़ियों को मौके पर भेजा गया। दमकलकर्मी करीब चार घंटे तक आग बुझाने में जुटे रहे। इस घटना में किसी के हताहत होने की सूचना नहीं है, लेकिन गोदाम में रखा सामान जलने से भारी नुकसान की आशंका है। चौथी घटना दक्षिणी दिल्ली के महरौली-बदरपुर रोड पर हुई, जहां गुरुवार सुबह एक बस में अचानक आग लग गई। शुरुआती जानकारी के अनुसार आग का कारण शॉर्ट सर्किट बताया जा रहा है। देखते ही देखते पूरी बस आग की चपेट में आ गई और जलकर खाक हो गई। हालांकि चालक और परिचालक की सतर्कता से सभी यात्रियों को समय रहते बाहर निकाल लिया गया, जिससे कोई जनहानि नहीं हुई।झ लगातार सामने आ रहीं आग लगने की घटनाओं के बाद राजधानी में फायर सेफ्टी, अवैध वायरिंग, ओवरलोडेड बिजली कनेक्शन और फायर एनओसी की स्थिति पर सवाल उठने लगे हैं। खासकर घनी आबादी वाले बाजारों, गोदामों और झुग्गी बस्तियों में आग से बचाव के पर्याप्त इंतजाम नहीं होने की समस्या बार-बार सामने आती रही है।

दमकल विभाग और पुलिस अधिकारियों का कहना है कि सभी घटनाओं की जांच की जा रही है। प्रारंभिक तौर पर कई मामलों में शॉर्ट सर्किट को कारण माना जा रहा है, जबकि कुछ जगहों पर अवैध वायरिंग और ज्वलनशील सामग्री के कारण आग तेजी से फैलने की आशंका जताई जा रही है। अधिकारियों का कहना है कि जांच के बाद जहां भी लापरवाही सामने आएगी, वहां नियमानुसार कार्रवाई की जाएगी।

ईरानी जहाज डूबने पर जयराम रमेश ने केंद्र को घेरा, कहा - इतनी डरपोक सरकार कभी नहीं देखी

नई दिल्ली। हिंद महासागर में अमेरिकी पनडुब्बी द्वारा ईरानी युद्धपोत IRIS Dena को डुबोए जाने की घटना ने भारत में एक बड़ा राजनीतिक विवाद खड़ा कर दिया है। कांग्रेस महासचिव जयराम रमेश ने इस मामले पर केंद्र सरकार की चुप्पी को आड़े हाथों लेते हुए इसे अब तक की सबसे डरपोक और भयभीत सरकार करार दिया है। जयराम रमेश ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म ङ्ग पर सरकार के रुख की कड़ी आलोचना की। उन्होंने कहा कि अमेरिकी कार्रवाई के भारत के लिए बेहद गंभीर निहितार्थ हैं, लेकिन ताजुब है कि अब तक कोई आधिकारिक प्रतिक्रिया नहीं आई है। उन्होंने तंज कसते हुए कहा कि मोदी सरकार ने ईरान में हुए लक्षित हमलों पर भी खामोशी नहीं तोड़ी थी, जिससे यह सरकार रणनीतिक रूप से कमजोर नजर आ रही है। जयराम रमेश ने याद दिलाया कि 19 से 25 फरवरी 2026 तक विशाखापत्तनम में आयोजित भारतीय नौसेना के प्रतिष्ठित मिलन अभ्यास में अमेरिका और ईरान, दोनों ने अपने युद्धपोतों के साथ हिस्सा लिया था। इस अभ्यास का उद्घाटन स्वयं रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने किया था। अभ्यास खत्म होने के कुछ ही दिनों बाद, श्रीलंका के गॉल से लगभग 40 समुद्री मील दूर अमेरिकी पनडुब्बी द्वारा उसी ईरानी जहाज को डुबो दिया गया जो भारत का मेहमान बनकर आया था। रमेश ने इसे असाधारण और चिंताजनक बताया। इससे पहले राहुल गांधी ने भी पीएम मोदी पर निशाना साधते हुए कहा था कि पश्चिम एशिया का युद्ध अब हमारे घर तक पहुंच गया है। उन्होंने चेतावनी दी कि होर्मुज जलडमरूमध्य में तनाव से भारत की 40फीसदी तेल और गैस आपूर्ति ठप हो सकती है। श्रीलंका की नौसेना ने गॉल के दक्षिण में चलाए गए रेस्क्यू ऑपरेशन में अब तक 87 शव बरामद किए हैं। जहाज पर करीब 180 लोग सवार थे, जिनमें से केवल 32 लोगों को बचाया जा सका है। ईरान ने इसे समुद्र में किया गया अत्याचार- बताया है और अमेरिका को गंभीर परिणाम भुगतने की चेतावनी दी है।

बेमतलब, बेमकसद युद्ध

हर युद्ध का कोई मतलब होता है, कोई लक्ष्य होता है। हाल में रूस ने यूक्रेन पर जो युद्ध शुरू किया है उसका मकसद उस क्षेत्र पर कब्जा करना है जिसमें रूसी बोलने वाले लोग रहते हैं और जो रूसी साम्राज्य का हिस्सा रहा है। अमेरिका ने भी जब-जब विभिन्न देशों पर हमले किए तो इसका औचित्य समझाने की कोशिश की थी। वियतनाम पर हमला कम्युनिस्टों को खत्म करने के लिए किया। इराक पर हमला इसलिए किया गया क्योंकि, अमेरिका के अनुसार, सद्दाम हुसैन के पास सामूहिक विनाश के हथियार थे। सद्दाम मारा गया, पर वह कथित हथियार नहीं मिले क्योंकि वह थे ही नहीं। अफगानिस्तान पर हमला 'आतंक को खत्म करने के लिए' किया गया। हाल ही में वेनेजुएला पर हमला कर उनके राष्ट्रपति मदुरो को अमेरिका उठा लाया। औचित्य था कि वेनेजुएला अमेरिका में ड्रग्स सप्लाई करता है। पर ईरान पर युद्ध थोपने के वक्त ट्रम्प को कोई स्पष्ट लक्ष्य नजर नहीं आता। यह नहीं कि ईरान से अमेरिका को कोई खतरा है। जून 2025 में ईरान के परमाणु संयंत्रों पर हमले के बाद ट्रम्प ने कहा था कि उनका परमाणु कार्यक्रम नष्ट कर दिया गया है। अब फिर कहा जा रहा है कि हम उनका परमाणु कार्यक्रम नष्ट करना चाहते हैं। पहले कहना था कि वह 'रिजीम चेंज' अर्थात सरकार बदलना चाहते हैं। ट्रम्प ने ईरान के लोगों से कहा भी था कि अपने मुकद्दर पर नियंत्रण करने का मौका है। अब कहा जा रहा है कि यह कोई लक्ष्य नहीं है। यह भी नहीं बताया जा रहा कि युद्ध का क्या अंत देखा जा रहा है? ईरान में हमारे पूर्व राजदूत गद्म धर्मेन्द्र का कहना है, यह चकरा देने वाली बात है कि युद्ध के लक्ष्य के बारे स्पष्टता नहीं है। न तो स्पष्ट है कि वह इसे कैसे खत्म करना चाहते हैं? समझ नहीं आता कि ट्रम्प और नेतन्याहू की जोड़ी दुनिया को किधर ले जाना चाहती है। अगर आपको खामेनेई पसंद नहीं तो आप उन्हें हटाने के लिए हजारों निर्दोषियों को खतरे में डालने के लिए तैयार हो? 86 वर्ष का अयातुल्ला खामेनेई तो मारा गया। उनके रक्षा मंत्री, आर्मी चीफ समेत 40 कमांडर मार दिए गए हैं। पर कोई संकेत नहीं कि वहां 'रिजीम चेंज' होने वाला है या ईरान कमजोर पड़ गया है। उल्टा, खामेनेई की मौत के बाद उन्हें शहीद करार दिया गया है। शिया मुसलमानों के लिए शहादत सबसे बड़ी कुर्बानी है। उनके विरोधी भी सरकार के पीछे एकजुट हो गए हैं। यूरोपियन कंसल ऑफ फारन अफेयर्स की विशेषज्ञ ईसी गैरलमेयह ने कहा है, खामेनेई की मौत एक युग का अंत है, पर वहां शासन व्यवस्था जारी है। ईरान की सेना और इस्लामिक रैवल्युशनरी गार्ड एकजुट हैं और सुरक्षा व्यवस्था पर उनका नियंत्रण है। वह अमेरिका और इजराइल का मुकाबला करने के लिए दृढ़ संकल्प हैं। खामेनेई की मौत के बाद उस क्षेत्र में अमेरिका के ठिकानों और साथी देशों पर ईरान से हो रहे लगातार हमले बताते हैं कि वह वेनेजुएला की तरह हथियार डालने को तैयार नहीं। उनके पास 3000 मिसाइल और हजारों ड्रोन हैं। जिस प्रचंडता से और जिस तेजी से वह बदला ले रहे हैं उससे पता चला है वह बिल्कुल तैयार थे। अमेरिका और इजराइल दोनों इससे दंग रह गए हैं। खामेनेई बहुत सख्त और कट्टर शासक थे। किसी भी तरह का विरोध बर्दाश्त नहीं करते थे, पर यह मामला ईरान के लोगों का है। डोनाल्ड ट्रम्प का नहीं। एक व्यक्ति को हटाना किसी युद्ध का मकसद नहीं हो सकता। हमारे साथ भी रिश्ते खट्टे- मीठे रहे। खामेनेई ने बाबरी मस्जिद गिराए जाने का भारी विरोध किया था। यदाकदा वहां 'अल्पसंख्यकों की हालत' पर टिप्पणी करते रहे। पर उन्हीं के समय चाहबहार बंदरगाह पर काम शुरू हुआ जिसके द्वारा हमें अफगानिस्तान और केन्द्रीय एशिया गणराज्य तक पहुंचने का रास्ता मिल गया था। अमेरिका के दबाव में अब वह ठप्प हो गया है। इजराइल के साथ हमारे सम्बंध बहुत अच्छे हैं। मुसीबत के समय,जैसे कारगिल का युद्ध, वह बहुत काम आते हैं। पर मुझे यह कहने में तनिक भी संकोच नहीं कि नेतन्याहू एक निर्दयी शासक है जिन्होंने अपनी राजनीति के लिए गाजा में 60000 लोग मरवा दिए हैं। और अब जिनकी नीति ने सारे क्षेत्र को अस्थिर कर दिया है। अक्तूबर में इजराइल में चुनाव है। सब यह देख कर किया जा रहा है। खाड़ी और मध्य पूर्व के देशों में आराम से रह रहे लाखों भारतीयों की ?? जिंदगी और आजीविका खतरे में है। भारत सरकार ट्रम्प और नेतन्याहू की गलत नीतियों का विरोध भी नहीं कर पा रही। अमेरिका और इजराइल के हमले और ईरान के जवाब ने सारे मध्य पूर्व को अस्थिर कर दिया है जिसके बहुत बुरे परिणाम निकलने वाले हैं, विशेष तौर पर हमारे लिए। ईरान अस्तित्व की लड़ाई लड़ रहा है, वह पीछे नहीं हटेगा। मौत के बाद खामेनेई और बड़ी चुनौती बन गए हैं। वहां बदले की आग भड़क गई है। लंदन स्थित भारतीय पत्रकार सैयद जुबैर अहमद ने कहा है, जो खामेनेई अपने देश को भारी आर्थिक कठनाई, प्रदर्शनों और आंतरिक लड़ाई-झगड़े के साथ चला रहे थे, को अमेरिका और इजराइल ने शहीद बना दिया। यूनिवर्सिटी ऑफ लंदन के अली हाशिम ने भी कहा है, अमेरिका और इजराइल उनके नेतृत्व पर निशाना लगा रहे हैं, पर इससे उनकी सरकार और मजबूत हो सकती है। उनकी हत्या के खिलाफ तेहरान की सड़कों पर लाखों प्रदर्शन कर रहे हैं। दुनिया भर में शिया और सुन्नी शोक में इकट्ठे हो गए हैं। ईरान ने कहा था कि अगर युद्ध शुरू किया गया तो वह सारे क्षेत्र में फैल जाएगा। यह अब क्षेत्रीय युद्ध का रूप ले रहा है। इस वक्त ईरान साऊदी अरब, यूएई, ओमान,कतर, बहरीन, ओमान, कुवैत सब पर ड्रोन और मिसाइल से हमले कर चुका है और कर रहा है। इन सब देशों में अमेरिका के अड्डे हैं। चारों तरफ अफरा-तफरी मची हुई है। तेल की कीमतों में अभी से 10ब का उछाल आ चुका है। गैस की आपूर्ति में रुकावट आने की सम्भावना है। होर्मूज के जल रास्ते को रोक कर ईरान ने तेल की सप्लाई में भारी रुकावट डाल दी है। मध्य पूर्व और खाड़ी के देश एक प्रकार से पश्चिम और पूर्व के देशों के बीच पुल हैं। उनके हवाई अड्डों को निशाना बनाया गया है। अंतर्राष्ट्रीय हवाई मार्ग बाधित हो गए हैं। हजारों वहां फंसे हुए हैं। हैरानी है कि दुबई को विशेष निशाना बनाया गया है।

ईरान पर चुप्पी हमें शर्मसार करेगी

'आप सुनिए मेरी बात। नैतिकता, आदर्श, सिद्धांत ये सब अपने घर-समाज के नियम हैं। विदेश नीति इनसे नहीं चलती है। वहां हर कोई अपना राष्ट्रीय हित सामने आता है। हमें भी यही करना होगा। यही हमारी सरकार कर रही है। आप खामखा उपदेश मत दीजिए।' फिर अपने लहजे को हल्का करने की नीयत से मुस्कुराए और बोले, 'आपको वो गाना याद है, कसमे वादे प्यार वफा, सब बातें हैं बातों का क्या? कोई किसी का नहीं है, झूठे नाते हैं नातों का क्या।'बातचीत शुरू ऐसे नहीं हुई थी। हम फिर पार्क में मिले थे। जैसा जमाने का दस्तूर है, चर्चा खेल और युद्ध पर चल रही थी। टी-20 पर चर्चा ऐसी, मानो खेल नहीं युद्ध चल रहा हो। और ईरान पर हमले और जवाबी हमले की चर्चा ऐसी मानो युद्ध नहीं खेल चल रहा हो। मिसाइल और लाशों को रन और विकेट की तरह गिना जा रहा था। हर हिंदुस्तानी कानून, देसी दवा और क्रिकेट के साथ-साथ अब सामरिक विषयों का एक्सपर्ट भी बन गया था। सुबह को स्विंग और यॉर्कर सिखाने वाले एक्सपर्ट अब ट्रम्प को हवाई युद्ध और पश्चिम एशिया की कूटनीति सिखा रहे थे। ईरान की तबाही और तेल के दाम पर निरपेक्ष भाव से चर्चा चल रही थी, जैसे मैच से पहले पिच की समीक्षा हो रही हो। भारत के विकल्पों पर चर्चा हो रही थी। मेरे बोलने में जरूर कुछ तल्खी रही होगी। मैंने कहा, जरा एक मिनट के लिए सोचिए, अगर ईरान की जगह हम होते और अगर कोई ऐसी बातचीत कर रहा होता तो हमें कैसे लगता? आखिर किसी की बर्बादी पर हम इतनी चटपटी चर्चा कैसे कर सकते हैं? उन्हें बात नागवार गुजरी थी। हम ईरान की तुलना भारत से कैसे कर सकते हैं? वहां इस्लामी चरमपंथी मुल्लाओं का राज है। जनता उस तानाशाही से मुक्ति चाहती है। यूं भी ईरान ने अंतर्राष्ट्रीय बिरादरी की नाक में दम कर रखा है। चोरी-छुपे एटम बम बना रहा है। उसे रोकना तो पड़ेगा ना। इस तरह के तर्क सुनकर मेरे कान पक चुके थे। अमरीका को ईरान के लोकतांत्रिक होने या न होने से रत्ती भर फर्क नहीं पड़ता। सच यह है कि ईरान के पहले लोकतंत्र को खत्म करने का काम 1953 में अमरीका की सी.आई.ए. ने किया था। अमरीका ने ही ईरान पर राजशाही लादी थी, जिसके खिलाफ वहां इस्लामी क्रांति हुई थी। और जो भी बोले, अमरीका तो इस सवाल पर न ही बोले। इसमें कोई शक नहीं कि वहां इस्लाम के नाम पर जो शासन चल रहा है, उससे जनता में भारी असंतोष है। हाल ही में जनता ने विद्रोह किया था, जिसे ईरान की सरकार ने बेरहमी से कुचल दिया था। लेकिन क्या इससे अमरीका को वहां दखलअंदाजी का हक मिल जाता है? अमरीका का जब मन आए, वेनेजुएला के राष्ट्रपति का अपहरण कर ले, जब चाहे ईरान के राष्ट्राध्यक्ष की हत्या कर दे। इसे हम कैसे देखते रह सकते हैं? मुझ जैसे लोगों को हमारी सरकार से लाख शिकायत है लेकिन इसका मतलब यह तो नहीं कि उसकी आड़ लेकर कोई विदेशी ताकत भारत की जनता को मुक्त करवाने के नाम पर भारत पर हमला कर दे। सीधी बात है-ट्रम्प को यह मंजूर नहीं कि ईरान उसके सामने सिर उठाकर चले। इसलिए उसने जोर-जबरदस्ती से वहां सत्तापलट करवाने की ठान ली है। एटम बम की बात सरासर झूठ है। अमरीका का रक्षा मंत्रालय कबूल कर चुका है कि ईरान एटम बम बनाने से कोसों दूर है। पिछले साल ईरान पर हमला करने के बाद ट्रम्प ने खुद कहा था कि ईरान के एटमी कार्यक्रम को नेस्तनाबूद कर दिया गया है। ईरान और अमरीका के बीच मध्यस्थता करने वाले बहरीन के विदेश मंत्री ने साफ कहा है कि ईरान लिख कर देने को तैयार था कि वह अभी या भविष्य में कभी भी एटम बम नहीं बनाएगा। अगर अमरीका को चोरी-छुपे एटम बम की चिंता है तो उसे सबसे पहले इसराइल और पाकिस्तान पर हमला करना चाहिए, जिनके पास अवैध एटम बमों का जखीरा है। सच कहूं तो एटम बम रोकने की सारी बात ही पाखंडपूर्ण है।

खुद दसियों हजार एटम बम रखने वाला अमरीका किस मुंह से दूसरों को पहला बम बनाने से रोक सकता है? कम से कम भारत तो इस पाखंड में शामिल न हो। जब तक हमारे एटम बम को दुनिया की मान्यता नहीं मिली थी, तब तक यही उपदेश हमें भी दिए जाते थे। और बाकी दुनिया को हम यही कहते थे-तुम कौन होते हो हमें सिखाने वाले। हमें तो ईरान के साथ खड़ा रहना चाहिए। कल तक हमारे प्रधानमंत्री ईरान और भारत के ऐतिहासिक संबंधों की दुहाई देते थे। पश्चिम एशिया के कुछेक देश जो आड़े वक्त हमारे काम आए थे, उनमें से ईरान एक है। चलिए खड़े होने की हिम्मत नहीं है तो कम से कम उनके राष्ट्राध्यक्ष की हत्या पर अफसोस तो जता सकते थे। इतना तो अमरीका की पिट्ठू पाकिस्तानी सरकार ने भी कह दिया। पता नहीं ट्रम्प के पास ऐसी क्या चाबी है कि मोदी जी सामान्य शिष्टाचार का बयान भी नहीं दे सकते। सच कहूं तो मुझे शर्म आती है। पहले हमारा देश गरीब था लेकिन सिर नहीं झुकाता था। अमरीका के सातवें बेड़े के सामने हमारी कोई ताकत नहीं थी लेकिन इंदिरा गांधी अमरीकी राष्ट्रपति निक्सन को दो-टूक जवाब दे सकती थीं। क्या हो गया है हमारी दृष्टि और आदर्शों को? बस मेरे मुंह से 'आदर्श' सुनते ही उन्होंने पलटवार किया था और 'जंजीर' का गीत याद दिलाया था। उनके चेहरे पर मुस्कुराहट थी। अब मेरी बारी थी- ''जो परिवार और समाज में होता है वही दुनिया नामक परिवार में भी होता है। न घर सिर्फ नैतिकता और आदर्श से चलता है, न दुनिया बिल्कुल इनके बिना चल सकती है। नैतिकता नीति से अलग नहीं है। दीर्घकाल में राष्ट्रहित को हासिल करने के लिए तो सिद्धांत चाहिए। रही बात आदर्श की, उसे छोड़कर सबसे ज्यादा नुकसान हमारा ही होगा।

अगर अमरीका को गुंडागर्दी की छूट मिल गई तो इसी छूट का इस्तेमाल कल चीन भी करेगा। चीन की नजर में पहले ताइवान का नंबर आएगा। और कौन जाने कभी हमारा नंबर भी आ सकता है। अगर आदर्श का दामन छोड़ देंगे तो कल हमारे साथ कौन खड़ा होगा? जिसकी लाठी उसकी भैंस वाली दुनिया में अगर हम लाठी वाले की लल्लो-चप्पो करेंगे तो इज्जत तो जाएगी ही, एक दिन उसकी लाठी भी हमीं पर पड़ेगी।'' अनायास मुझे भी एक फिल्मी गीत की एक पंक्ति याद आ गई-'बिक गया जो वो खरीदार नहीं हो सकता।'-योगेन्द्र यादव

सम्पादकीय...

बेटियां और बहुएं

मुझे लगभग 23 साल होने जा रहे है बुजुर्गों की सेवा करते हुए। मैंने लाखों बुजुर्गों और उनके बहू-बेटे, बेटियों के रिश्तों को अनुभव किया है। क्योंकि बुजुर्ग आते है, जाते है (स्वर्ग सिधारते है) अपनी अमिट यादें, अपने अनुभव हमारे सामने छोड़ जाते है। कुछ दिन पहले एक समाचार मेरे सामने आया कि एक प्रसिद्ध डॉक्टर जो अब बुजुर्ग हो चुके हैं उनका बेटा-बेटी आस्ट्रेलिया में सैटल है, परन्तु बूढ़े मां-बाप जिन्होंने उन्हें बड़ी मेहनत से पाला-पोसा, बाद में उन्हें अकेला भारत में छोड़कर चले गए। वो बहुत गंदी हालत में रह रहे थे, जब पड़ोसियों को बहुत बदबू आई तो उन्होंने उनकी खबर ली। पत्नी मर चुकी थी और पिता अपनी गंदगी के साथ गंदे-सड़े कपड़ों में लेटे हुए थे, जिनको बड़ी मुश्किल से पड़ोसियों ने सम्भाला और अभी मालूम पड़ा कि वो भी स्वर्ग सिधार गए है। ऐसे बेटे-बेटी को क्या कहूं। अक्सर कहा जाता है बेटे तो बदल जाते है परन्तु बेटियां नहीं, पर यहां तो बेटी का बुरा हाल है। मुझे नहीं मालूम वो अपने बच्चों को क्या शिक्षा देंगे और उनसे क्या उम्मीद रखेंगे। मेरे हिसाब से तो इतिहास दोहराता है। या कोई भी किसी का दिल दुखाता है या आह लेता है उसे भुगतना पड़ता है और बच्चों के मामले में तो मैंने अक्सर देखा जो बोओगे वही काटोगे। एक तरफ बुरे बेटे-बेटियों की खबर आती है तो दूसरी तरफ श्रवण पुत्र या राम जैसे पुत्रों बहुओं, बेटों, बेटियों की भी कमी नहीं। बहुत से ऐसे उदाहरण भी मेरे सामने आते हैं जिनको देखकर या उनके बारे में सुनकर भी गर्व महसूस होता है। पिछले दिनों की बात है बहुत बड़े उद्योगपति इनॉक्स के मालिक देवेन्द्र कुमार जैन जी का देहांत हुआ। बहुत ही नेक इन्सान थे। जैसा कि आप सबको मालूम है मैं बुजुर्गों के साथ-साथ चौपाल नामक संस्था द्वारा जिसकी मैं चीफ पैट्रन हूं, उनके साथ मिलकर जरूरतमंद महिलाओं, लड़कियों को आत्मनिर्भर यानी अपने पांवों पर खड़े होने में मदद करने में भी सहायता करती हूं, जो संस्था देवेन्द्र जैसे लोगों की मदद से चलती है, जहां वे लोग धनराशि देते हैं और उस धनराशि से जरूरतमंद लड़कियों को स्वावलम्बी बनाने के लिए दिया जाता है और उन्हें वो राशि वापिस लौटानी होती है तथा उस राशि से और अन्य लड़कियों की मदद की जाती है, जिससे यह चेन चलती है तथा आगे बढ़ती जा रही है। लगभग 42,000 लड़कियों की सहायता हो चुकी है। ऐसे देवेन्द्र जैन जी जब दुनिया से चले गए तो लगा कि यह सहायता अब नहीं मिलेगी परन्तु उनके बेटे विवेक जैन, बहू नंदिता जैन, बेटी मंजू जैन, दामाद अरुण जैन आगे आए और उनकी बहू ने भरे हॉल में घोषणा की कि जैसे बाबू जी सहयोग करते थे वैसे ही वो करते रहेंगे। वाह! क्या बात है, ऐसे बहू, बेटा, बेटी, दामाद हर घर को मिलें। मैं जब उनके घर गई थी अब भी मुझे बड़ा अच्छा संस्कारिक वातावरण मिला। उनकी बहू, बेटी में मैंने बहुत संस्कार देखे, मुझे बहुत अच्छा लगा। ऐसे ही हमारे वरिष्ठ नागरिक केसरी के बहुत से सदस्य हैं, जो चले गए परन्तु उनकी बहुएं, बेटे आगे आकर वैसे ही सहायता करते है। क्योंकि मैंने दोनों कामों को करते देखा है। बुजुर्गों के लिए कम लोग आगे आते है, परन्तु कई बहुएं ऐसी हैं जैसे पंजाबी बाग ब्रांच की सीमा अग्रवाल चली गईं परन्तु उनकी बहू मोनिका अग्रवाल आगे आकर वैसे ही बुजुर्गों को एडोप्ट कर रही है। वैसे ही मनोज सिंघल अपनी मां मालती सिंघल के जाने के बाद बुजुर्गों की सहायता कर रहे है। यही नहीं मोनिका अग्रवाल अपनी सासू मां का जन्मदिन भी ब्रांच में आकर मना रही है।

अब घृणा और युद्ध पर टिका होगा नया विश्व

अरुण कुमार त्रिपाठी

अमेरिका और इजराइल ने रमजान के पवित्र महीने में ईरान पर हमला करके सुप्रीम नेता अयातुल्ला अली खामेनेई, ईरान इस्लामिक रिवोल्यूशनरी गार्ड कोर के कमांडर जनरल पकपोर, रक्षामंत्री अली शमखान को मार डाला है। इससे पहले लड़कियों के स्कूल पर हमला करके कम से कम 50 बच्चियों को भी मौत के घाट पर उतार दिया गया है। रमजान के पवित्र महीने में हुई 86 वर्षीय नेता खामेनेई की इस शहादत को लोग करबला के मैदान में हुई हुसैन की शहादत के बराबर मान रहे हैं। इक्कीसवीं सदी के तीसरे दशक में छिड़े इस युद्ध का संदर्भ और वजहें बेहद आधुनिक हो सकती हैं लेकिन इसके प्रतीक जिस तरह से प्राचीन हैं उससे लगता है कि इसे धर्म आधारित सभ्यतामूलक युद्ध का रूप देने में कोई कसर नहीं छोड़ी जा रही है। मामला सिर्फ इतना ही नहीं है कि हमला रमजान के पवित्र महीने के मध्य में किया गया है मामला यह भी है कि यह हमला पुरिम दिवस पर किया गया है। पुरिम यहूदियों का एक प्रमुख और आनंद का त्योहार है। बाइबल की कथाओं के अनुसार इस दिन फारस यानी आज के ईरान में हामान नाम के दुष्ट अधिकारी के हाथों से यहूदियों के एक समूह को हत्या से बचाया गया था। पुरिम का हिब्रू में अर्थ होता है लाटरी। हामान ने यहूदियों की हत्या के लिए यह दिवस लाटरी निकाल कर तय किया था।

इस दिन एस्तेर ने रानी बनकर अपने चाचा मोर्देके के साथ मिलकर यहूदियों को नरसंहार से बचाया था। इस दिवस को यहूदी लोग एस्तेर का पाठ करते हैं, दान देते हैं, रंगीन वेशभूषा धारण करते हैं और हैमेंस्टीन नाम की तिकोनी पेस्ट्री खाते हैं। जाहिर सी बात है कि 21 वीं सदी के युद्ध भले ही आधुनिक हथियारों जैसे कि मिसाइलों और एआई से माध्यम से लड़े जा रहे हों लेकिन उनकी वजहें नस्ली हैं, धार्मिक हैं और पौराणिक हैं। भले ही बहाना एटमी हथियारों को नष्ट करने और अपने को सुरक्षित करने का दिया जा रहा हो लेकिन उनका लक्ष्य एक सभ्यतामूलक युद्ध को छेड़ना और भेदभाव के आधार पर एक विश्व व्यवस्था का निर्माण करना है। हम अब एक ऐसी दुनिया में प्रवेश कर चुके हैं जहां, नस्ल और धर्म आधारित घृणा, युद्ध और हिंसा नियम बनते जा रहे हैं और संवाद, वार्ताएं और राजनय अपवाद। विडंबना देखिए कि यह सब सुरक्षा के नाम पर हो रहा है लेकिन वास्तव में कोई सुरक्षित नहीं है। जो असुरक्षित हैं और मारे जा रहे हैं उनकी तो बात होनी ही चाहिए लेकिन जो हिंसा को अपनी सुरक्षा के लिए आवश्यक मानते हैं वे भी बेहद डरे हुए हैं। इजराइल ने भले ही पुरिम जैसे त्योहार के मौके पर युद्ध छेड़ा हो लेकिन उसके नागरिक इस दिन जश्न मनाने की स्थिति में नहीं थे। लोग जगह जगह भाग रहे थे और तेल अवीव हवाई अड्डे पर सन्नाटा पसरा हुआ था। उड़ानें रद्द हो गई थीं। तेल अवीव ही क्यों एक वैश्विक बाजार और पर्यटन स्थल समझे जाने वाले दुबई की स्थिति भी लगभग तेल अवीव जैसी ही हो रही थी। अमेरिका दावा करता है कि वार्ताएं फेल हो रही हैं इसलिए उसे युद्ध में उतरना पड़ा है लेकिन वास्तविकता यह है कि वार्ताएं महज दिखावा हैं और युद्ध एक नियम बन गया है। बल्कि यह कहा जाए कि राजनय दिखावा है तो अतिश्योक्ति नहीं होगी। अमेरिका दावा कर रहा था कि वह ईरान को परमाणु हथियारों को नष्ट करने के लिए बाध्य करना चाहता है इसलिए उससे वार्ता कर रहा है और दबाव बना रहा है। लेकिन वार्ता और संधि से अधिक जरूरी लक्ष्य है ईरान में सत्ता परिवर्तन का। इसी मकसद से जनवरी के महीने में वहां सत्ता विरोधी जबरदस्त आंदोलन भड़काया गया था या कहें कि उठ खड़ा हुआ था। ईरान की सरकार ने उस आंदोलन को शांत करने के लिए जबरदस्त दमन किया। बताते हैं कि उसमें हजारों लोग मारे गए।

तमाम पाबंदियों से घिरे ईरान में महंगाई बढ़ना लाजिमी है और लोग उसी के विरोध में सड़कों पर उतर आए थे। लेकिन इस अभियान में इजराइली जासूसी एजंसी मोसाद और अमेरिकी जासूसी एजंसी सीआईए की भूमिका की खुलेआम चर्चा हुई थी। ईरान यूरोपीय देशों की तरह एक लोकतांत्रिक देश नहीं है। लेकिन वहां सब कुछ तानाशाही से होता है ऐसा भी नहीं है। ईरान ने अमेरिकी साम्राज्यवाद के विरुद्ध इस्लामी कानून के दायरे में एक चुनाव प्रणाली और सत्ता हस्तांतरण की व्यवस्था विकसित की है। अगर बाहरी शक्तियां उसे निशाने पर न लें तो वह सऊदी अरब समेत, ओमान, संयुक्त अरब अमीरात जैसे तमाम राजतंत्र पर आधारित देशों के मुकाबले अधिक संप्रभु और गरिमामय व्यवस्था है। लेकिन इजराइल और अमेरिका वहां अपने पसंद की कठपुतली सरकार बनाना चाहते हैं जो कि 1979 की इस्लामी क्रांति से पहले वहां पर थी। लेकिन सवाल यह है कि क्या ईरान में तख्तापलट के लिए छेड़े गए युद्ध के उपरांत वहां अमेरिका समर्थक शासन प्रणाली कायम हो पाएगी। अगर कायम भी हुई तो क्या वह स्थायी हो पाएगी? क्योंकि हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि ईरान में राष्ट्रीय स्वाभिमान खाड़ी के अन्य देशों के मुकाबले अधिक है। संभव है कि इस हमले के बाद मध्यपूर्व के दूसरे देशों में अमेरिका विरोध और राष्ट्रीय स्वाभिमान की भावना अधिक बलवती हो। यह नहीं कहा जा सकता कि यह भावना तमाम देशों के राजतंत्र को अपदस्थ कर देगी लेकिन उनके लिए असहज स्थिति तो पैदा कर ही सकती है। ईरान विरोधी इस युद्ध में भारत का युद्धोन्मादी शक्तियों के पक्ष में खड़ा होना दुर्भाग्यपूर्ण है। पुरिम के दिवस के ठीक एक दिन पहले भारत के प्रधानमंत्री इजराइल में थे। भारत ने इस यात्रा का उद्देश्य तमाम प्रकार की प्रौद्योगिकी पाना और रक्षा सौदा करना बताया है लेकिन अघोषित उद्देश्य तो यही लग रहा है कि भारत इजराइल के माध्यम से अमेरिका को साधना चाहता है और प्रधानमंत्री के भाषण से यह बात भी प्रकट होती है कि भारत अपनी राजनीति और कूटनीति को इजराइल के मॉडल पर ढालना चाहता है। प्रधानमंत्री मोदी का भारत को मातृभूमि और इजराइल को पितृभूमि बताना महज संयोग नहीं है इसके पीछे भारत और इजराइल के राष्ट्रवाद को एक दूसरे की प्रतिकृति बताने और बनाने का प्रयास है। इजराइल में फिलस्तीनियों के प्रति जितनी घृणा है उसी को आधार बनाकर भारतीय मुसलमानों के प्रति भी घृणा की बृहत्तर योजना को राष्ट्रीय रूप दिया जा रहा है। अगर नेतनयाहू का यहूदीवाद पूरे अरब जगत में फैले फिलस्तीनियों को अपने निशाने पर रखते है तो नए भारत का हिंदुत्व भी पूरे उपमहाद्वीप के मुसलमानों के साथ असहजता महसूस करता है। कहीं बांग्लादेशी घुसपैठियों के नाम पर अभियान चलता है तो कहीं कश्मीरियों के नाम पर। बाकी देश में बुलडोजर की तबाही और लव जेहाद व धर्मांतर के नाम पर कानूनी चाबुक तो चलते ही रहते हैं। लेकिन गौरतलब है कि यहूदीवाद महज फिलस्तीनियों को ही निशाना नहीं बनाता बल्कि उन मिजराही यहूदियों पर भी भरोसा नहीं करता जो मध्यपूर्व से संबंधित बताए जाते हैं। इजराइली सिद्धांतकार दावा करते हैं कि उन प्राच्य यहूदियों से हमारा कोई भी रीति रिवाज नहीं मिलता। वे चाहते हैं कि अशिक्षित यहूदियों के भीतर जो मध्यपूर्व की आध्यात्मिक परंपरा के अवशेष हैं उन्हें उनके भीतर से निकाला जाए। उनके स्कूलों में इस तरह से प्रयास चल भी रहे हैं। वे कहते भी हैं कि जो यहूदी अरब से आ रहे हैं उनके हाथों में अस्पताल से उठाए गए अरबों के हजारों बच्चे दे दिए गए। ठीक यही स्थिति भारत के दलितों और पिछड़ों के साथ भी है। हिंदुत्व के पैरोकार चुनावी रणनीति के तहत भले दलितों पिछड़ों को राजनीति में स्थान दे दें लेकिन वैचारिक विमर्श और सनातन के आख्यान में उनके लिए कोई जगह नहीं है। यह दूरी यूजीसी नियमावली के लागू होते घृणा और टकराव के रूप में प्रकट होने लगी। जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय और दिल्ली विश्वविद्यालय के टकराव इसी कहानी को कहते हैं। आज भी वहां सीवर में काम करने वाले 77 प्रतिशत मजदूर उन्हीं दलित जातियों से आते हैं जिनके साथ सदियों से भेदभाव होता आया है।

भारत और इजराइली राष्ट्रीयता में एक दूसरे से प्रेरणा लेने की यह होड़ न सिर्फ इन दोनों राष्ट्रों को संकीर्ण बना रही है बल्कि उनके सहयोग से दुनिया को युद्ध और घृणा केंद्रित कर रही है। यहीं पर दो-राज्य समाधान के समर्थक और पीस नाउ मूवमेंट के संस्थापक व प्रसिद्ध इजराइली कवि व लेखक अमोस ओज का वह कथन याद आता है कि इस इक्कीसवीं सदी में राष्ट्रवाद की बात करना हीथ्रो एअरपोर्ट पर लालटेन दिखाना है। वे कहते थे कि मैं इजराइल से प्यार करता हूं लेकिन इससे बहुत ज्यादा सहमत नहीं हूं। आज दुनिया जिस दिशा में बढ़ रही है उसमें राष्ट्रवादी संकीर्णता के साथ एक साम्राज्यवादी जज्बा भी है। यह साम्राज्यवाद पहले के साम्राज्यवाद से अधिक विनाशकारी है। समय शांति और प्रेम के योद्धाओं के फिर से जागने और आगे बढ़ने का है और दुनिया को नए तरीके से विन्यासित करने का है। यहीं पर अमोस ओज की वह टिप्पणी याद आती है कि आग बहुत बड़ी है और मैं एक चम्मच लेकर खड़ा हूं लेकिन हममें से लाखों लोग हैं और प्रत्येक के हाथ में एक चम्मच है।

ख़ामेनेई की हत्या, भारत की चुप्पी और अंतरराष्ट्रीय नैतिकता का संकट

अमेरिका के बमवर्षक विमानों द्वारा गिराए गए बंकर बस्टर बमों से ईरान के सुप्रीम लीडर आयतुल्लाह अली खामेनेई, उनकी महज 14 माह की मासूम नातिन सहित निकट परिजनों और हाई-रैंकिंग अधिकारियों की मौत के बाद ईरान की सरकार ने उन्हें शहीद घोषित करते हुए 40 दिनों का राष्ट्रीय शोक घोषित किया है। इस घटना ने वैश्विक स्तर पर मिश्रित प्रतिक्रिया हुई है। कुछ देशों ने इसकी निंदा की, जबकि अन्य ने चुप्पी साधी या समर्थन जताया। लेकिन सोशल मीडिया पर पिछले दिनों एक विचित्र बात दिखाई दी। अली खामेनेई की हत्या की खबर के बाद भारत के कुछ वर्गों में शोक से अधिक उल्लास का भाव था। सवाल उठता है–क्या किसी विदेशी राष्ट्राध्यक्ष की हत्या पर खुश होना हमारी नैतिक संवेदना का विस्तार है, या उसका क्षरण? और क्या यह खुशी किसी वैचारिक असहमति से उपजी है, किसी पिछली अदावत या राष्ट्र विरोधी या धर्म विरोधी कार्य के कारण थी या सिर्फ इसलिए कि वह एक मुस्लिम देश का नेता था और स्वयं एक मुस्लिम समुदाय का धर्म गुरु भी था? इस सारे संदर्भ में कुछ प्रश्न हैं जो असहज करते हैं, लेकिन पूछे जाने चाहिए क्योंकि मामला किसी एक व्यक्ति का नहीं, अंतरराष्ट्रीय कानून, संप्रभुता और भारत की विदेश नीति की आत्मा का है। यदि किसी सम्प्रभुता प्राप्त स्वतंत्र राष्ट्र के प्रमुख पर सैन्य हमला होता है और उसे सामर्थ टार्गेटेड किलिंग या स्ट्रेटेजिक स्ट्राइक कहकर जायज ठहराया जाता है, तो कम-से-कम विश्व समुदाय को यह तो बताया जाना चाहिए कि उसका अपराध क्या था? क्या वह अंतरराष्ट्रीय न्यायालय द्वारा दोषसिद्ध था? क्या उस पर किसी मान्य वैश्विक संस्था ने प्रतिबंधों से आगे जाकर सैन्य कार्रवाई की अनुमति दी थी? संयुक्त राष्ट्र संघ इ के चार्टर के अनुसार किसी संप्रभु राष्ट्र पर बल प्रयोग तभी वैध है जब आत्मरक्षा में हो या सुरक्षा परिषद की अनुमति से हो। बिना किसी न्यायिक प्रक्रिया के E&trajudicial killing अंतरराष्ट्रीय मानवीय कानून का गंभीर उल्लंघन है। यदि इन मानकों को दरकिनार कर महाशक्तियाँ तय करेंगी कि कौन जिएगा और कौन मरेगा, तो यह नियम-आधारित विश्व व्यवस्था नहीं, बल्कि शक्ति-आधारित व्यवस्था होगी। क्या अयातुल्ला अली खामेनेई का अपराध सिर्फ इतना था कि उन्होंने डोनाल्ड ट्रम्प के समक्ष घुटने टेकने से इंकार किया था? क्या किसी राष्ट्र का अमेरिका का मित्र न होना, उसकी राजनीतिक स्वतंत्रता का प्रयोग करना, बमबारी का कारण बन सकता है? यदि हाँ, तो कल कोई भी असहमत देश इसी कसौटी पर चढ़ाया जा सकता है। भारत स्वयं को शांति-अहिंसा और नैतिकता का पक्षधर बताता रहा है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने अनेक मंचों पर कहा है कि यह युद्ध का युग नहीं है। पर जब एक संप्रभु राष्ट्र के शीर्ष नेतृत्व की बमवर्षा में हत्या होती है, तब भारत की प्रतिक्रिया क्या होती है? क्या हम कम-से-कम शांति की अपील भी नहीं कर सकते? कूटनीति में शब्दों का चयन अत्यंत सावधानी से होता है। शोक-संदेश देना किसी नीति-समर्थन का प्रमाण नहीं होता, बल्कि मानवीय संवेदना का संकेत होता है। भारत की विदेश नीति का इतिहास गुटनिरपेक्षता और रणनीतिक स्वायत्तता पर आधारित रहा है। परंतु यदि हमारी प्रतिक्रियाएँ मित्र-राष्ट्रों की स्वीकृति पर निर्भर दिखें, तो क्या यह स्वायत्तता बची रहती है? ज्ञातव्य है कि मोदी जी इजराइल और,श्र के प्रति चिंता व्यक्त की और इजराइल के प्रति अतिरिक्त प्रेम दिखाने के लिए अपना ट्वीट वहाँ की हिब्रू भाषा में करने का चमत्कार भी कर दिखाया। लेकिन ईरान के सुप्रीम लीडर और धर्मगुरु की हत्या पर शोक का एक ट्वीट भी ना कर सके वह भी तब जब चंद वर्ष पूर्व मोदी सरकार ने ईरान के राष्ट्रपति के निधन पर न सिर्फ शोक सन्देश दिया बल्कि एक दिन का राष्ट्रीय शोक भी घोषित किया था .यह याद रखा जाना चाहिए कि भारत और ईरान के संबंध किसी एक विचारधारा या सरकार के कारण नहीं, बल्कि सदियों की सांस्कृतिक और सामरिक साझेदारी पर आधारित हैं। अटल बिहारी बाजपेयी के प्रधानमंत्रित्व काल में दोनों देशों के बीच महत्वपूर्ण संधि हुई। 2016 में नरेंद्र मोदी ने तेहरान यात्रा के दौरान भारत-ईरान मित्रता को शताब्दियों पुरानी बताया गया। भारत के ईरान के साथ सबसे ज्यादा दोस्ताना संबंध खामेनेई के कार्यकाल में ही रहे, ट्रंप के पहले कार्यकाल में भारत की अमेरिका से नजदीकी के बाद भी ईरान ने कभी भारत का विरोध नहीं किया। मुस्लिम देश होने के बाद भी ईरान ने पाकिस्तान के खिलाफ कूटनीतिक लड़ाई में भारत का साथ दिया और संयुक्त राष्ट्र जैसे मंचों पर भी अक्सर भारत के पक्ष का समर्थन किया। एक और बड़ा प्रतीकात्मक उदाहरण है चाबहार बंदरगाह। चीन और पाकिस्तान के दबावों के बावजूद ईरान ने भारत को इस रणनीतिक परियोजना में स्थान दिया, जिससे भारत को अफगानिस्तान और मध्य एशिया तक वैकल्पिक मार्ग मिल सका। अमेरिकी प्रतिबंधों के बावजूद ईरान ने कई अवसरों पर भारत को ऊर्जा आपूर्ति में रियायतें दीं। ईरान उन चुनिंदा देशों में है जो डॉलर की बजाय भारतीय रुपये में व्यापार करते हैं। ईरान के दसियों हजार करोड़ रुपये भारतीय बैंकों में जमा रहने से कुछ बैंकों की स्थिति सुधरी है।

ऐसे में यदि आज उस देश के शीर्ष नेतृत्व की हत्या होती है, तो क्या भारत की न्यूनतम संवेदनात्मक प्रतिक्रिया भी अनावश्यक मानी जानी चाहिए? इतिहास साक्षी है कि सत्ता परिवर्तन की राजनीति ने कई देशों को अस्थिर किया है। ईराक में, बाद में आम तौर पर निराधार साबित हुए आरोपों के आधार पर, 2003 का अमेरिकी हस्तक्षेप आज भी क्षेत्रीय अस्थिरता का उदाहरण है। तारीफ़ करनी होगी तत्कालीन प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह की दृढ़ता और स्पष्टता की, जिन्होंने विदेशी मीडिया के सामने भी इसे अमेरिका की भूल बोलने से परहेज नहीं किया । सबसे ताज़ा उदाहरण वेनेज़ुएला में सत्ता परिवर्तन का है। बांग्लादेश में भारत की पक्षधर शेख हसीना को अपदस्थ करने के पीछे अमेरिकी कारगुजारी भी थी। ट्रम्प पचासों बार अंतरराष्ट्रीय स्तर पर मोदी जी की बेइज्जती कर चुका है। चाहे टैरिफ के नाम धमकाकर सीज फायर करवाने का दावा हो, भारत के राफेल विमान पाकिस्तान द्वारा गिराए जाने का ढिंढोरा पीटना हो या यह दावा करना हो कि वे जब चाहें नरेंद्र मोदी को सत्ता से हटा सकते हैं, भारत के प्रति ट्रम्प का रवैया बराबरी का नहीं रहा है. यदि महाशक्तियाँ तय करेंगी कि कौन-सी सरकार वैध है और कौन-सी नहीं, तो यह अंतरराष्ट्रीय अराजकता को जन्म देगा। भारतीयों को या किसी अन्य देशवासी को यह भ्रम नहीं पालना चाहिए कि महाशक्तियों की नीतियाँ अस्थायी मित्रता पर आधारित होती हैं। वे अपने राष्ट्रीय हित के अनुसार मित्र और विरोधी तय करती हैं। यदि आज किसी और की संप्रभुता पर प्रहार हो रहा है और हम तालियाँ बजा रहे हैं, तो कल जब हमारी बारी आएगी तब कौन खड़ा होगा?

यह स्पष्ट कर देना आवश्यक है कि किसी भी नेता की नीतियों से असहमति लोकतांत्रिक अधिकार है। ईरान की आंतरिक राजनीति, मानवाधिकार रिकॉर्ड या क्षेत्रीय नीतियों पर आलोचना संभव है और होनी चाहिए। परंतु असहमति और हत्या–इन दोनों के बीच एक स्पष्ट रेखा है। यदि हम इस रेखा को मिटा देंगे, तो अंतरराष्ट्रीय राजनीति का नैतिक आधार समाप्त हो जाएगा। खामेनेई के शासन की कमियाँ गिनाने वालों को यह जवाब भी देना चाहिए कि उसके यदि कोई अपराध हो भी तो, बिना न्यायिक प्रक्रिया के उनको मनमानी सज़ा देने का अधिकार अमेरिका को किसने दिया? क्या वह स्वयंभू अंतर्राष्ट्रीय दरोगा है? ईरान को परमाणु सम्पन्न बनने से रोकने का तर्क देने वाले अमेरिका ने अपने परमाणु हथियार कितने कम किए या हठी राष्ट्राध्यक्ष वाले दक्षिण कोरिया के कितने हथियार कम करवाए? अली खामेनेई यदि चाहते तो वे भी ट्रम्प के सामने घुटने टेककर अंकल की जिओ पॉलिटिक्स में अमेरिका का मोहरा बनकर अपने मरने तक सुप्रीम लीडर बने रह सकते थे, उन्हें तो पाँच साल में चुनाव भी नहीं लड़ना था।

वे चाहते तो ईरान छोड़कर किसी अन्य देश की शरण भी ले सकते थे. लेकिन एक 86 वर्षीय राष्ट्राध्यक्ष यदि अपने पद पर रहते हुए आखिरी समय तक अपने कार्यालय में, अपने अधिकारियों से मीटिंग करता हुआ, अपने देश का हित सोचता हुआ बमबारी में मारा जाता है, तो वह दृश्य हमें कम-से-कम यह सोचने पर विवश करना चाहिए कि सत्ता संघर्ष की यह शैली किस दिशा में जा रही है। खामेनेई तो आने वाले समय में अमेरिका के साम्राज्यवाद के खिलाफ़ लड़ाई का एक प्रेरक चेहरा बनकर लम्बे समय तक याद रखे जाएंगे लेकिन हमें सोचना है कि क्या यही वह विश्व व्यवस्था है जिसकी कामना हम अपनी आने वाली पीढ़ियों के लिए करते हैं?

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक विजय कुमार भाटी ने करुणा ऑफसेट प्रिंटर्स, ए-9, साउथ पीचमकेला एक्स. दिल्ली-33, से मुद्रित कर कार्यालय, बी-2/370, सुल्तानपुरी, दिल्ली-86 से प्रकाशित किया सम्पादक : विजय कुमार भाटी, मो. : 09582093548 समाचार पत्र में प्रकाशित सामग्री से संपादक का सहमत होना आवश्यक नहीं विवादास्पद केवल दिल्ली कोर्ट में होंगे। (DELHIN/2011/...)

सीरत वेलफेयर कमेटी ने खामनेई की शहादत पर व्यक्त किया शोक

बहराइच।

सामाजिक संगठन सीरत वेलफेयर कमेटी (रजि0) की एक आपात बैठक शहर के मोहल्ला काजीपुरा स्थित मिल्ली काम्पलेक्स सभागार में संगठन के उपाध्यक्ष मिर्जा शकील बेग की अध्यक्षता एवं मुतवल्ली ईदगाह इशरत महमूद खान की सरपरस्ती में ईरान के सुप्रीम लीडर आयतुल्लाह सैयद अली खामनेई की इजरायली हमले में हुई मौत पर उन्हें श्रद्धांजलि पेश कर संवेदनाएं व्यक्त की गईं। इस सभा का शुभारंभ मौलाना शाहिद अख्तर के कुरान पाठ से हुआ।इसके बाद मुतवल्ली ईदगाह इशरत महमूद खान ने अपने संबोधन में कहा कि ईरान के मजहबी रहनुमा अयातुल्लाह अली खामनेई जुल्म के खिलाफ और मिल्लत के इत्तेहाद के लिए लड़ते हुए शहीद हुए हैं,उन्हें

इतिहास में सदियों याद रखा जाएगा।मौलाना अकील उल्लाह शाहिद नदवी ने कहा कि खामनेई साहब जालिमों के सामने झुके नहीं बल्कि शहादत हासिल कर पूरी दुनिया को जो पैगाम दिया है उसे हमेशा याद रखा जाएगा।बैठक की अध्यक्षता कर रहे मिर्जा शकील बेग ने शहीद खामनेई साहब के जीवन पर प्रकाश डालते हुए कहा कि पूरी दुनिया में अमेरिका व इजरायल की तानाशाही के साथ ही खामनेई साहब की मौत पर रंजो गम है।उन्होंने कहा कि 86 बरस के बुजुर्ग ने बगैर डरे जिस तरह मुकाबला करते हुए शहादत पाई है वह इतिहास में दर्ज होगा। इस

अवसर पर संगठन के सचिव शादाब हुसैन ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि खामनेई साहब की मौत से पूरी दुनिया के मुसलमान और मानवतावादी लोग दुखी हैं। उन्होंने हमेशा शांति-भाईचारा एवं फिलिस्तीनियों के पक्ष में सुपर पावर अमेरिका व इजराइल जैसे जालिमों के मुकाबले मुजाहिदाना किरदार अदा करते हुए अपनी व अपने परिवार की कुर्बानी देकर इस्लाम को शर्मिंदा नहीं होने दिया बल्कि शहीद होना पसंद किया। अंत में भारत के प्रधानमंत्री का अत्याचारी देशों के समर्थन में रहने तथा देश के बड़े मुस्लिम संगठनों व धार्मिक गुरुओं की खामोशी की निंदा की गई।इस बैठक में हाजी आसिफ आलम खान (संरक्षक), डॉ0 अजीमुल्ला खान (कोषाध्यक्ष), मोहम्मद अकरम एडवोकेट, मिर्जा शकील बेग, मौलाना मुजीब कासमी,डॉ0 अबरार उल हक, शादाब अंसारी, वली मोहम्मद व रियाज अहमद एडवोकेट आदि मौजूद रहे। सभा का समापन मौलाना शाहिद अख्तर चांद की दुआ से हुआ।

इसके अलावा शहर के मोहल्ला अकबरपुरा स्थित मस्जिद इमामिया से सुमैया माल तक अफसर हुसैन पूर्व सभासद के नेतृत्व में एक कैंडल मार्च निकल गया और काजीपुरा स्थित इमामबाड़ा नवाब साहब में ईसाले सवाब हेतु मजलिस आयोजित की गई जिसे इमामे जुम्मा मौलाना मोहम्मद मेहंदी साहब ने संबोधित किया।

पति पहले पत्नी को मारा, फिर खुद भी दे दी जान

मुरादाबाद। जनपद में एक जनसनीखेज मामला सामने आया है। यहां मझोला थाना क्षेत्र में पति ने पत्नी की चाकू मारकर हत्या कर दी। बाद में उसी चाकू से खुद को जख्मी कर जान दे दी। दोनों के शव सोनकपुर ओवरब्रिज के पास पड़े मिले। महिला के मायके वालों का कहना है कि पति-पत्नी को 9 साल से ब'चा नहीं हो रहा था। इस वजह से दोनों के बीच अक्सर झगड़ा होता रहता था। पति दूसरी शादी करने को कहता था तो पत्नी और भड़क जाती। होली वाले दिन शाम के समय मझोला पुलिस को सूचना मिली कि काशीराम कालोनी के जंगल में एक युवक घायल अवस्था में पड़ा है। सूचना पर पुलिस ने मौके पर पहुंची तो एक युवक खून से लथपथ हालत में पड़ा था।

घायल युवक को जिला अस्पताल में भर्ती कराया, जहां थोड़ी देर बाद ही उसकी मौत हो गई। बाद में पुलिस ने मौके पर जाकर और छानबीन की तो जहां युवक घायल अवस्था में मिला था उससे करीब 15 मीटर की दूरी पर एक महिला का शव पड़ा था, उसके गले पर धारदार हथियार के हमले के निशान मिले। कुछ दूरी पर एक बाइक भी खड़ी मिली। पुलिस ने बाइक नंबर की मदद से पड़ताल की तो युवक की पहचान सिविल लाइंस के नया गांव पीएसी रहने वाले 32 वर्षीय विनोद उर्फ विकी के रूप में हुई। जबकि मृतक महिला उसकी पत्नी ममता है। बाद में कहानी भी स्पष्ट हो गई। मौके पर पहुंची पुलिस ने शव को पोस्टमॉर्टम के लिए भेजा। दंपत्ति की मौत से परिजनों में कोहराम मचा हुआ है।

विश्व शांति के लिए वामपंथी संगठनों ने किया प्रदर्शन

मुरादाबाद।

ईरान पर अमेरिका इजराईल द्वारा किए जा रहे हमलों के विरोध में वामपंथी मोर्चा ने विश्व शांति के लिए ईरान पर होने वाले हमलों को तत्काल प्रभाव से रोके जाने की मांग को लेकर कलेक्ट्रेट पर जोरदार प्रदर्शन किया। मांगो के समर्थन में महामहिम राष्ट्रपति को ज्ञापन भी भेजा गया है। देश के तमाम वामपंथी दलों के संयुक्त आह्वान पर मुरादाबाद में भी भारत की कम्युनिस्ट पार्टी भाकपा माले भारत की कम्युनिस्ट पार्टी मार्क्सवादी द्वारा संयुक्त रूप से ईरान पर अमेरिका और इजरायल द्वारा किए गए सैनिक हमलों में आम जनता के नरसंहार और वहां के सुप्रीमो अयातुल्लाह अली खामनेई सहित लगभग 50 सर्वो'च लीडर्स की साजिशन हत्या के विरोध में कलेक्ट्रेट पर जोरदार प्रदर्शन किया गया। वामपंथी नेताओं ने अपनी बात रखते हुए अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड

अमेरिका और इजराईल पर साधा निशाना

ट्रंप और इजरायली राष्ट्रपति बैजामिन नेतन्याहू की कड़ी निंदा करते हुए कहा कि इन हमलों में ईरान की राष्ट्रीय संप्रभुता यूनाइटेड नेशन चार्टर और सभी अंतरराष्ट्रीय संधियों की खुलेआम अनदेखी की गई है डोनाल्ड ट्रंप और नेतन्याहू इस हद तक पगला गए हैं कि ईरानी सुप्रीमो सहित लगभग 50 शीर्ष नेताओं की साजिशन सामूहिक हत्या सहित तमाम अस्पतालों एवं स्कूलों पर हमला करके सैकड़ो स्कूली ब'चों और आम नागरिकों का नरसंहार करके युद्ध के सामान्य मानवीय नियमों का घोर उल्लंघन किया जा रहा है अब इसराइल ने लेबनान पर भी हमला करके अपनी विस्तारवादी नीतियों को अंजाम दे दिया है। मांग उठाई गई है कि भारत सरकार को अपने दोस्त देश ईरान पर हुए इन अमेरिकी और इसराइली सैनिक हमलों की साफ तौर पर निंदा करनी चाहिए और विश्व शांति के लिए अंतरराष्ट्रीय मंचों पर ईरान पर हो रहे इन हमलों को रोकने की मांग करनी चाहिए। इस दौरान कामरेड थान सिंह, चंद्रपाल सिंह आजाद, कासिम अली खान, सुशील बिश्नोई एडवोकेट, शरीफ अहमद, शहाबुद्दीन, जुल्फिकार सैफी, याकूब सैफी, महिपाल सिंह एडवोकेट एसपी सिंह रोहताश राजपूत एवं लईक अंसारी सहित अनेक पदाधिकारी मौजूद रहे।

होली पर जुलूस में शामिल हुए मुस्लिम समाज के लोग

मुरादाबाद।

महानगर में होली का पर्व बहुत धूमधाम के साथ मनाया गया। हर तरफ होली की धूम रही। होली के अवसर पर 84 घंटा मंदिर से एक भव्य जुलूस निकाला गया। इस आयोजन की खास बात यह रही कि इसमें मुस्लिम समाज के लोगों को भी आमंत्रित किया गया, जिससे गंगा-जमुनी भाईचारे की मिसाल देखने को मिली। मुस्लिम समाज के लोगों ने जुलूस का भव्य स्वागत किया । जुलूस का आयोजन हिंदू मंडल व्यापार मंडल के अध्यक्ष अरविंद कुमार जॉनी, अतुल कुमार सोती और एडवोकेट सुप्रीत खन्ना के नेतृत्व में किया गया। यह जुलूस 84 घंटा मंदिर से शुरू होकर शहर के विभिन्न मार्गों से गुजरा। मार्ग में श्रद्धालुओं ने एक-दूसरे को रंग-गुलाल लगाकर होली की शुभकामनाएं दीं। जगह-जगह स्वागत मंच बनाए गए थे, जहां पुष्प वर्षा कर जुलूस का अभिनंदन किया गया। हैंडीक्राफ्ट डेवलपमेंट सोसाइटी के अध्यक्ष मोहम्मद नोमान मंसूरी ने अपनी टीम के साथ जुलूस का स्वागत किया। इस टीम में शत्रु, नौशाद वारसी, शाह आलम, मुख्तियार, सैय्यद राशिद अली, नसीम भाई और अनवार मालिक जैसे कई सदस्य शामिल थे। असालतपुरा चौराहे पर अतहर अंसारी ने भी जुलूस का भव्य स्वागत किया।

इस अवसर पर महापौर विनोद अग्रवाल, एसपी सिटी कुमार रणविजय सिंह, एडीएम सिटी 'योति सिंह, सीओ सिटी सुनीता दहिया, सिटी मजिस्ट्रेट और अपर नगर आयुक्त सहित कई जनप्रतिनिधि और प्रशासनिक अधिकारी मौजूद रहे। सुरक्षा व्यवस्था के लिए कोतवाली मुगलपुरा सहित बड़ी संख्या में पुलिस बल तैनात था। पूरे आयोजन के दौरान शांति, सौहार्द और भाईचारे का माहौल बना रहा। शहरवासियों ने इस पहल की सराहना करते हुए इसे सामाजिक एकता और सद्भाव का प्रतीक बताया।

जनता सेवक समाज ने कराया होली मिलन समारोह- रोज़ा इफ्तार

मुरादाबाद।

जनता सेवक समाज मुरादाबाद की ओर से 69वां होली मिलन समारोह एवं रोजा इफ्तार का आयोजन सर्व धर्म सदभाव रूप में भांग वालों की धर्मशाला दरीबा पान मुरादाबाद पर आयोजित किया गया जिसकी अध्यक्षता मिर्जा अरशद बेग व सरपरस्ती सरदार गुरविंदर सिंह ने की। कार्यक्रम का संचालन मनोरमा गुप्ता,नीरज रस्तोगी व सुभाष चंद्र गुप्ता ने संयुक्त रूप से किया। होली मिलन समारोह के उपलक्ष में विनय शर्मा,अरविंद किशोर ,मनसूर उर रहमान, अतुल जौहरी , सुमित गुप्ता,मोहम्मद मजीद, पूनम गुप्ता,जुनैद एजाज एडवोकेट,डॉ दुर्गेश यादव, आदित्य कुमार एडवोकेट, विवेक अग्रवाल एडवोकेट,शकील खान, नीरज रस्तोगी, सूर्याश गुप्ता ,प्रदीप रस्तोगी, गजेंद्र मोहन शर्मा, दिव्यांश गुप्ता आदि ने संबोधित कर फूलों की होली खेली और सर्वधर्म सदभाव का परिचय देते हुए रोजा इफ्तार का आयोजन किया। बार एसोसिएशन मुरादाबाद के नव निर्वाचित युवा महामंत्री कपिल गुप्ता एडवोकेट को

मोमेंटो देकर सम्मानित किया गया। पूरे कार्यक्रम में अनेकता में एकता का समायोजन मिला। कार्यक्रम में हैविट मुस्लिम इंटर कॉलेज के मैनेजर मुफ्ती मोहम्मद आजम ,नागरिक जन कल्याण समिति के अध्यक्ष फिरोज खान ,हकीम रेहान अतीक सफदर नियाज़ी, बीके लक्ष्मी दीदी, मुकुल अग्रवाल आदि ने अपना विशेष संबोधन दिया तथा होली के ऐतिहासिक परिचय करते हुए आम जनता से उसके अनुरूप कार्य करने का आह्वान किया। इस मौके पर जाबर खान,धर्मेंद यादव, चांद खान, हाजी मो वसीम,मो तालिब,लक्ष्मी चौहान, शैली गुप्ता,आसिफ चौधरी, डॉक्टर मो अज़हर,आदेश रस्तोगी,डॉ दुर्गेश यादव,प्रदीप रस्तोगी सहित बड़ी संख्या में लोग मौजूद रहे।अंत मे सुभाष चंद्र गुप्ता महामंत्री जनता सेवक समाज ने सभी मेहमानों का आभार व्यक्त किया।

3 साल बाद आप दफ्तर में उड़े खुशियों के रंग! क्लीन चिट के बाद केजरीवाल-सिसोदिया ने मनाई कट्टर ईमानदार होली

नई दिल्ली। आम आदमी पार्टी के राष्ट्रीय संयोजक अरविंद केजरीवाल ने बुधवार को पार्टी कार्यकर्ताओं के साथ जमकर होली खेली. आप पंजाब प्रभारी और दिल्ली के पूर्व उपमुख्यमंत्री मनीष सिसोदिया के आवास पर होली मिलन समारोह आयोजित हुआ था. तथाकथित शराब घोटाला मामले में आरोप मुक्त किए जाने की खुशी सभी नेताओं के चेहरे पर साफ झलक रही थी. सभी ने एक दूसरे को गुलाल अबीर लगाकर और गले लग कर होली पर्व के साथ-साथ कोर्ट में कट्टर ईमानदार साबित होने के लिए बधाई दी. इस मौके पर अरविंद केजरीवाल ने कहा कि हमने मनीष सिसोदिया के घर पर पार्टी के सभी साथियों और कार्यकर्ताओं के साथ कट्टर ईमानदार होली मनाई. सच और संघर्ष के रंगों के साथ ऐसी ही आगे बढ़ते रहेंगे. अरविंद केजरीवाल ने मीडिया से बातचीत में कहा कि यह रंगों का त्यौहार होली सबके जीवन में खूब सारे खुशियों के रंग लेकर आए, सबके परिवार को सारी खुशियां दे और सबको बहुत-बहुत खुश रखे. आम आदमी पार्टी और उसके पूरे नेतृत्व के साथ बहुत बड़ा अन्याय किया गया था और एक षड्यंत्र रचा गया था. अब कोर्ट में यह साबित हो गया है कि आम आदमी पार्टी एक कट्टर ईमानदार पार्टी है और पार्टी के सभी नेता कट्टर ईमानदार है. अरविंद केजरीवाल ने आगे कहा कि यह बहुत दुख की बात है कि बीजेपी ने होली के मौके पर भी पूरी दिल्ली के अंदर शराब की दुकानें खोली हुई हैं. सालों-सालों से त्योहारों के अवसर पर शराब की दुकानें बंद हुआ करती थीं, ताकि शराब पीकर लोग हुड़दंग ना करें. आज होली के मौके पर, जब कई सालों से दुकानें बंद रहा करती थीं, ऐसे में बीजेपी सरकार ने शराब की दुकानें खोलकर बहुत गलत किया है. अरविंद केजरीवाल ने एक्स पर दिल्ली समेत सभी देशवासियों को होली के पावन पर्व की हार्दिक शुभकामनाएं दी. उन्होंने कहा कि रंगों का यह त्योहार आपके जीवन में खुशियां, प्रेम और नई ऊर्जा भर दे. आप सभी का जीवन सुख, शांति और समृद्धि से भर जाए. उनकी साजिशों और झूठ के बीच भी आम आदमी पार्टी के रंग फीके नहीं पड़े हैं, क्योंकि हमारी ताकत है ईमानदारी और जनता का भरोसा. वहीं, आप पंजाब प्रभारी और दिल्ली के पूर्व उपमुख्यमंत्री मनीष सिसोदिया ने भी सभी को होली के पवन पर्व की हार्दिक शुभकामनाएं दी है. उन्होंने कहा कि त्योहार वही, रंग नया. कट्टर ईमानदारी का रंग है, फीका पड़ना इसकी आदत नहीं. इस बार की होली के जश्न में सिर्फ लाल-पीला-हरा नहीं, कट्टर ईमानदारी का रंग भी हवा में घुला. क्योंकि कुछ रंग चेहरे सजाते हैं और कुछ इतिहास लिखते है. चेहरे का रंग शाम तक उतर जाता है, पर अपनी ईमानदारी का रंग आने वाली पीढ़ियों तक दिखाई देगा. आप सबको होली की सच्ची, साफ़ और थोड़ी सी बेबाक शुभकामनाएं.

कार्यकर्ताओं ने तीन सालों से नहीं मनाई थी होली- सौरभ

उधर, आम आदमी पार्टी के दिल्ली प्रदेश अध्यक्ष सौरभ भारद्वाज ने कहा कि पिछले करीब 3 साल से पार्टी के कार्यकर्ता इस तरह से होली नहीं मना पाए थे. पहले साल होली के वक्त मनीष सिसोदिया जेल में थे.

भारत ने पहली बार खामेनेई की मौत पर जताया शोक

तेल अवीव/ तेहरान। अमेरिका-इजरायल और ईरान जंग का आज छठा दिन है। भारत ने पहली बार ईरानी सुप्रीम लीडर अयातुल्ला अली खामेनेई की मौत पर शोक जताया है। भारत सरकार की ओर से विदेश सचिव विक्रम मिसरी ने नई दिल्ली स्थित ईरान दूतावास जाकर खामेनेई के निधन पर संवेदना जताई। उन्होंने कंडोलेंस बुक पर हस्ताक्षर कर श्रद्धांजलि दी। अमेरिका-इजराइल के हमले में 28 फरवरी को खामेनेई की मौत हो गई थी। ईरान ने एक दिन बाद इसकी आधिकारिक घोषणा की थी। खामेनेई के निधन के बाद दुनियाभर के कई देशों से शोक संदेश भेजे जा रहे हैं।

विदेश सचिव विक्रम मिसरी ईरानी दूतावास पहुंचे; शोक पुस्तिका पर साइन किए, श्रद्धांजलि दी

हरियाणा राज्यसभा चुनाव, तीसरे प्रत्याशी सतीश नांदल ने किया नामांकन

चंडीगढ़ ।

हरियाणा राज्यसभा चुनाव के लिए बीजेपी कैंडिडेट संजय भाटिया ने अपना नामांकन भर दिया है। उनके साथ सीएम नायब सैनी भी रहे। उधर, कांग्रेस ने कर्मवीर सिंह बौद्ध को राज्यसभा प्रत्याशी बनाया है। यह उनका पहला चुनाव होगा। बीजेपी कैंडिडेट नामांकन भरने के बाद बौद्ध ने भी विधानसभा भवन पहुंचकर अपना नामांकन किया।

उनके साथ पूर्व सीएम भूपेंद्र सहित कांग्रेस के 34 विधायक मौजूद रहे। इससे पहले कांग्रेस ऑफिस में कर्मवीर बौद्ध ने नामांकन पत्र भरा। बताया जा रहा है कि हरियाणा के एक सीनियर आईएएस ने उन्हें पार्टी हाईकमान तक पहुंचाया। इसके बाद राहुल गांधी ने ही उनका नाम हरियाणा से राज्यसभा सदस्य के लिए सुझाया।

नामांकन के बाद उन्होंने कांग्रेस हाईकमान का धन्यवाद किया। उधर, रोहतक के बोहर गांव के रहने वाले सतीश नांदल राज्यसभा के लिए तीसरे उम्मीदवार के रूप में अपना नामांकन कर दिया है। सतीश करीब दो बजे निर्दलीय विधायक सावित्री जिंदल, देवेंद्र कादियान और राजेश जून के साथ विधानसभा पहुंचे और नामांकन किया। नामांकन से पहले सतीश नांदल ने मीडिया से कहा कि हमारे साथी विधायकों ने सोच विचार की है कि एक निर्दलीय प्रत्याशी भी होना चाहिए, इसलिए पर्चा भर रहे है। वहीं, चुनावी रण में तीन प्रत्याशी होने से एक बार फिर पहले (2016 और 2022) की तरह ही खेला होने के आसार बढ़ गए है। हालांकि, कांग्रेस प्रत्याशी बौद्ध ने कहा कि पार्टी के सभी 37 विधायक हमारे साथ है। संख्या बल भी तो कोई मायने रखता है।

सावित्री जिंदल सहित 3 एमएलए साथ रहे; कांग्रेस के कर्मवीर बौद्ध और बीजेपी से संजय भाटिया भर चुके पर्चा

वायुसेना का सुखोई फाइटर जेट असम में लापता- दावा- कार्बी आंगलॉन्ग जिले में लोगों ने धमाका सुना; सर्च ऑपरेशन लॉन्च

नई दिल्ली । भारतीय वायु सेना का एक सुखोई Su-30MKI फाइटर जेट गुरुवार को असम में अचानक रडार से गायब हो गया। अधिकारियों के मुताबिक विमान से रडार संपर्क टूटने के बाद तुरंत स्थिति का पता लगाने के लिए खोज और जांच की प्रक्रिया शुरू कर दी गई है।

शुरुआती जानकारी के मुताबिक 4.5 जेनेरेशन का एयरक्राफ्ट सुखोई-30 जेट गुरुवार शाम करीब 7 बजे कार्बी आंगलॉन्ग जिले में लापता हुआ। रिपोर्ट्स में दावा किया गया कि एयरक्राफ्ट क्रैश हो गया है और वहां लोगों ने धमाका सुना है। हालांकि आधिकारिक रूप से इस बात की पुष्टि नहीं हुई है।

ह फाइटर जेट नियमित उड़ान या मिशन पर था, तभी अचानक उसका ग्राउंड कंट्रोल से संपर्क टूट गया। रडार से संपर्क समाप्त होने के बाद वायु सेना ने तुरंत अलर्ट जारी करते हुए घटना की जांच के लिए IAF टीम को असम रवाना किया है। भारतीय वायुसेना के अधिकारियों ने बताया कि फिलहाल विमान की सटीक स्थिति और संपर्क टूटने की वजह का पता लगाया जा रहा है। फिलहाल वायु सेना की टीमें घटनास्थल का पता लगाने में जुटी हुई है। इलाके में खोज अभियान भी चलाया जा रहा है ताकि विमान और उसमें सवार पायलटों के बारे में जानकारी मिल सके। सुखोई Su-30MKI भारतीय वायुसेना के सबसे उन्नत और ताकतवर लड़ाकू विमानों में से एक माना जाता है।

किसी भी मुद्दे का समाधान सैन्य संघर्ष से नहीं हो सकता- प्रधानमंत्री मोदी

नई दिल्ली । प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने पश्चिम एशिया और यूक्रेन में जारी संघर्षों को शीघ्र समाप्त करने का बृहस्पतिवार को आह्वान करते हुए कहा कि किसी भी मुद्दे का समाधान सैन्य टकराव के माध्यम से नहीं किया जा सकता। मोदी ने फिनलैंड के राष्ट्रपति अलेक्जेंडर स्टब के साथ व्यापक वार्ता करने के बाद ये टिप्पणियां कीं। उन्होंने कहा, भारत और फिनलैंड, दोनों ही कानून के शासन, संवाद और कूटनीति में विश्वास रखते हैं। हम इस बात पर सहमत हैं कि किसी भी मुद्दे का समाधान केवल सैन्य संघर्ष से नहीं किया जा सकता। मोदी ने मीडिया में जारी बयान में कहा, चाहे यूक्रेन हो या पश्चिम एशिया, हम संघर्षों के शीघ्र अंत और शांति की दिशा में किए जा रहे हर प्रयास का समर्थन करना जारी रखेंगे। वार्ता में दोनों पक्षों ने भारत-फिनलैंड संबंधों को डिजिटलीकरण और सतत विकास के क्षेत्र में रणनीतिक साझेदारी का दर्जा देने पर भी सहमति जताई। उन्होंने कहा, एआई (सूचना प्रौद्योगिकी) से लेकर 6जी दूरसंचार तक, स्वच्छ ऊर्जा से लेकर क्वांटम कंप्यूटिंग तक, यह साझेदारी प्रौद्योगिकी के कई क्षेत्रों में हमारे सहयोग को गति और ऊर्जा प्रदान करेगी। मोदी ने कहा कि भारत-यूरोपीय संघ मुक्त व्यापार समझौता भारत और फिनलैंड के बीच व्यापारिक संबंधों को मजबूत करेगा। उन्होंने कहा, यह समझौता भारत एवं फिनलैंड के बीच व्यापार, निवेश और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में सहयोग को और मजबूत करेगा। फिनलैंड के राष्ट्रपति स्टब ने व्यापार, निवेश एवं महत्वपूर्ण प्रौद्योगिकी सहित कई क्षेत्रों में द्विपक्षीय सहयोग को मजबूत करने के उद्देश्य से बुधवार को भारत की चार दिवसीय यात्रा शुरू की।

पश्चिम एशिया संकट - जंग हमारे घर तक आ गई, राहुल गांधी का पीएम मोदी पर हमला; पूछा- अब तक चुप क्यों?

नई दिल्ली ।

कांग्रेस नेता और लोकसभा में विपक्ष के नेता राहुल गांधी ने गुरुवार को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी पर फिर हमला बोला है। मामला हिंद महासागर में एक ईरानी युद्धपोत के डूबने से जुड़ा है। आरोप है कि श्रीलंका के पास एक अमेरिकी पनडुब्बी ने इस जहाज पर हमला किया था। राहुल गांधी ने इस घटना पर प्रधानमंत्री मोदी की चुप्पी को लेकर सवाल उठाए हैं। राहुल गांधी ने एक्स पर पोस्ट में कहा कि पश्चिम एशिया का संघर्ष अब भारत के दरवाजे तक पहुंच गया है। उन्होंने प्रधानमंत्री मोदी पर आरोप लगाया कि उन्होंने भारत की रणनीतिक स्वायत्तता को त्याग दिया है। राहुल ने कहा कि ऐसे समय में देश को एक स्थिर नेतृत्व की जरूरत है। उन्होंने आगे लिखा, यह संघर्ष हमारे घर तक आ गया है, हिंद महासागर में एक ईरानी युद्धपोत डूब गया है। फिर भी प्रधानमंत्री ने कुछ नहीं कहा है। इसके बजाय, भारत के पास एक समझौता करने वाले प्रधानमंत्री हैं जिन्होंने हमारी रणनीतिक स्वायत्तता को छोड़ दिया है।

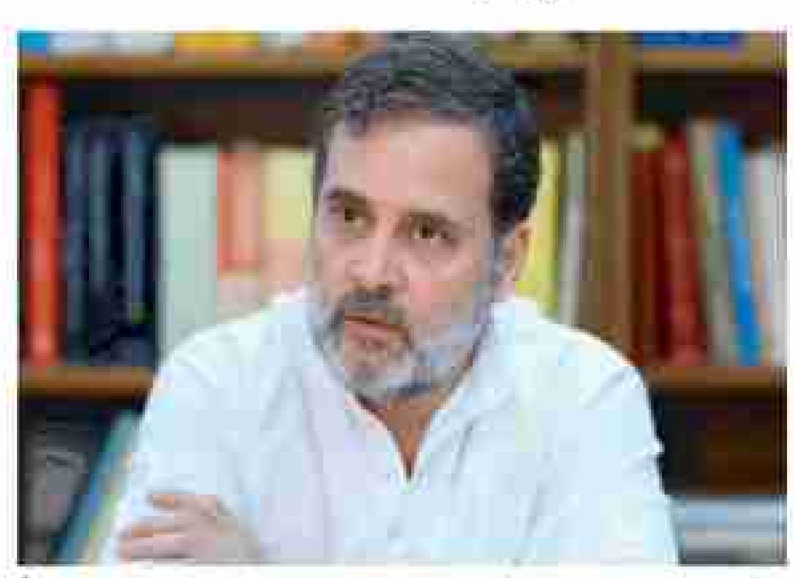

तेल आपूर्ति को लेकर भी जताई चिंता

राहुल गांधी ने खाड़ी क्षेत्र में बढ़ते तनाव के कारण भारत की तेल आपूर्ति पर मंडरा रहे खतरे को लेकर भी चिंता जताई। उन्होंने कहा, भारत की तेल आपूर्ति खतरे में है, क्योंकि हमारे आयात का 40 प्रतिशत से ज्यादा हिस्सा होर्मुज जलडमरूमध्य से होकर गुजरता है। एलपीजी और एलएनजी के लिए तो स्थिति और भी खराब है।

पूर्व विदेश सचिव ने कहा- अमेरिका ने भारत की अनदेखी की

भारत के पूर्व विदेश सचिव कंवल सिब्बल ने कहा कि आइरिस देना ने भारत के बुलावे पर ही इन नौसैनिक अभ्यासों में हिस्सा लिया था। उन्होंने कहा कि अमेरिकी हमले ने भारत की संवेदनशीलता को नजरअंदाज किया है। सिब्बल के मुताबिक, जहाज निहत्था था क्योंकि ऐसे अभ्यासों में जहाज गोला-बारूद लेकर नहीं चल सकते। सिब्बल ने कहा कि यह हमला सुनियोजित था, क्योंकि अमेरिका को इस अभ्यास में ईरानी जहाज की मौजूदगी की जानकारी थी। अमेरिका को भी इस अभ्यास में बुलाया गया था, लेकिन उसने आखिरी समय में अपना नाम वापस ले लिया था, शायद इसी ऑपरेशन की वजह से। उन्होंने कहा कि भारत की नैतिक जिम्मेदारी बनती है क्योंकि वे हमारे मेहमान थे।

बंगाल में एसआईआर की जांच का डर, 48 घंटों में 3 लोगों ने आत्महत्या

बंगाल । राज्य में पिछले 48 घंटों में एसआईआर के फैसले के साये में आए तीन लोगों ने आत्महत्या कर ली। एक अन्य व्यक्ति की स्वास्थ्य संबंधी जटिलताओं के कारण मृत्यु हो गई, जिसके लिए परिवार ने एसआईआर से संबंधित चिंता को जिम्मेदार ठहराया है। मगराहट के 44 वर्षीय वैन चालक रफीक अली गाजी ने कथित तौर पर मंगलवार रात को फांसी लगाकर आत्महत्या कर ली, जब उन्हें पता चला कि पिछले शनिवार को प्रकाशित अंतिम मतदाता सूची में उनका नाम विचाराधीन के रूप में दर्ज है। रफीक की पत्नी अमीना बीबी ने चुनाव आयोग के खिलाफ उस्ती पुलिस स्टेशन में लिखित शिकायत दर्ज कराई। पुलिस ने घटना की जांच शुरू कर दी है। स्थानीय टीएमसी कार्यकर्ताओं ने शव के साथ विरोध प्रदर्शन किया और बुधवार को कुछ समय के लिए उस्ती-शिरकोल सड़क को अवरुद्ध कर दिया।

नीतीश, नितिन, उपेंद्र सहित 6 ने राज्यसभा चुनाव के लिए किया नामांकन

पटना। बिहार की राजनीति में गुरुवार का दिन उस समय ऐतिहासिक बन गया, जब तीन अलग-अलग दलों के राष्ट्रीय अध्यक्षों ने एक साथ राज्यसभा चुनाव के लिए नामांकन पत्र दाखिल किया। यह पहली बार है जब प्रदेश की राजनीति में इस तरह का दृश्य देखने को मिला। केंद्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री अमित शाह की मौजूदगी में नामांकन प्रक्रिया पूरी हुई, जिससे इस घटनाक्रम का राजनीतिक महत्व और बढ़ गया। राज्यसभा चुनाव के लिए नामांकन करने वालों में भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष नितिन नवीन, जदयू के राष्ट्रीय अध्यक्ष व मुख्यमंत्री नीतीश कुमार तथा राष्ट्रीय लोक मोर्चा के अध्यक्ष उपेंद्र कुशवाहा शामिल हैं। तीनों नेताओं ने विधानसभा पहुंचकर अपना नामांकन पत्र दाखिल किया। इन तीनों का एक साथ पर्चा भरना बिहार की राजनीति में एक नया रिकॉर्ड माना जा रहा है। नामांकन के दौरान एनडीए खेमे में उत्साह का माहौल देखने को मिला। विधानसभा परिसर में बड़ी संख्या में समर्थक और पार्टी पदाधिकारी मौजूद रहे। नेताओं ने इसे गठबंधन की मजबूती और आपसी तालमेल का संकेत बताया। राज्यसभा चुनाव के लिए दाखिल नामांकन पत्रों की जांच छह मार्च को होगी। प्रत्याशियों के नाम वापस लेने की अंतिम तिथि नौ मार्च निर्धारित की गई है। जरूरत पड़ने पर 16 मार्च को सुबह नौ बजे से शाम चार बजे तक मतदान कराया जाएगा और उसी दिन शाम पांच बजे से मतगणना शुरू होगी।

'अमित शाह की मौजूदगी में एनडीए ने एकजुटता दिखाई। 'बिहार की राजनीति में यह एक ऐतिहासिक घटनाक्रम है।

गृह मंत्री अमित शाह ने क्या कहा?

सीएम नीतीश कुमार ने राज्यसभा जाने पर गृह मंत्री अमित शाह ने कहा कि नीतीश कुमार का कार्यकाल स्वर्णिम रहा। बिहार की जनता ही नहीं पूरे देश को उनका कार्यकाल याद रहेगा। हमलोग नई पारी की शुभकामना देते हैं।

जदयू दफ्तर में हंगामा, एमएलसी को घेरा

इधर, सीएम नीतीश के राज्यसभा जाने की खबर मिलने के बाद सुबह से ही कार्यकर्ता सीएम आवास पहुंचने लगे। कार्यकर्ताओं ने कहा कि, नीतीश कुमार बिहार के हैं। उन्हें कहीं नहीं जाने देंगे। हम अपनी जान दे देंगे। सीएम हाउस के बाहर कार्यकर्ता रोते दिखे। कार्यकर्ताओं ने सीएम हाउस जा रहे बीजेपी कोटे के मंत्री सुरेंद्र मेहता, जेडीयू एमएलसी संजय गांधी और जेडीयू विधायक प्रेम मुखिया को भगा दिया। जदयू दफ्तर में भी गुस्साए कार्यकर्ताओं ने तोड़फोड़ की।

कांग्रेस बोली- भाजपा का षड्यंत्र अब बेनकाब हो गया है

बिहार प्रदेश कांग्रेस ने सोशल मीडिया पर आरोप लगाया कि बिहार में जनमत की हत्या की जा रही है और भाजपा का षड्यंत्र अब बेनकाब हो गया है। नीतीश कुमार के नाम पर वोट लेकर उन्हें पद से हटाकर खुद सत्ता पर पूरा कब्जा करने की योजना भाजपा कई महीनों से बना रही थी, जिसकी आशंका कांग्रेस पहले ही जता चुकी थी। कांग्रेस के अनुसार आज सामने आ रही खबरें उसी कथित षड्यंत्र का परिणाम हैं। पार्टी ने यह भी आरोप लगाया कि इस पूरे घटनाक्रम में भाजपा के साथ जदयू के कुछ नेता भी शामिल हैं और इसी योजना के तहत नीतीश कुमार के स्वास्थ्य के साथ भी लगातार खिलवाड़ किया गया। कांग्रेस ने कहा कि यह फैसला नीतीश कुमार का नहीं हो सकता और इसे बिहार के करोड़ों मतदाताओं द्वारा दिए गए जनादेश के साथ विश्वासघात बताया।

प्रधानमंत्री ने राजनीतिक और नैतिक रूप से आत्मसमर्पण किया - खरगे

नई दिल्ली। कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे ने ईरान युद्ध से जुड़े घटनाक्रमों का हवाला देते हुए बृहस्पतिवार को आरोप लगाया कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने राजनीतिक और नैतिक रूप से आत्मसमर्पण कर दिया है। खरगे ने एक्स पर पोस्ट किया, मोदी सरकार का भारत के सामरिक और राष्ट्रीय हितों के प्रति लापरवाही भरा परित्याग सबके सामने है। एक ईरानी जहाज भारत का मेहमान था, हमारे द्वारा आयोजित इंटरनेशनल फ्लीट रिव्यू 2026 से निहत्थे लौट रहा था, लेकिन हिंद महासागर क्षेत्र में उस पर हमला कर दिया गया। चिंता या शोक का कोई बयान नहीं आया। प्रधानमंत्री मोदी मौन साधे हुए है। उन्होंने कहा, होर्मुज की खाड़ी में 1100 नाविकों के साथ 38 भारतीय ध्वज वाले वाणिज्यिक जहाज फंस गए हैं। कैप्टन आशीष कुमार समेत दो भारतीय नाविकों की कथित तौर पर मौत हो गई है। कोई समुद्री बचाव या राहत अभियान क्यों नहीं चलाया जा रहा है? खरगे ने कहा, खाड़ी क्षेत्र के देशों में एक करोड़ भारतीय रहते हैं। मेडिकल छात्र मदद मांगने के लिए हताशा भरा वीडियो संदेश जारी कर रहे हैं। उन्होंने सवाल किया, भारत सरकार उनकी भलाई कैसे सुनिश्चित कर रही है? क्या प्रभावित क्षेत्रों से निकासी की कोई योजना है? खरगे ने दावा किया कि प्रधानमंत्री मोदी का आत्मसमर्पण राजनीतिक और नैतिक दोनों है। उन्होंने कहा, यह भारत के मूल राष्ट्रीय हितों को कमतर दिखाता है और वर्षों से लगातार, पूर्ववर्ती सरकारों द्वारा सावधानीपूर्वक और कड़ी मेहनत से बनाई और अपनाई गई हमारी विदेश नीति को नष्ट करने वाला है।

भारत टी20 विश्व कप के फाइनल में, न्यूजीलैंड से मुकाबला 8 मार्च को

मुंबई । भारत ने चौथी बार टी-20 वर्ल्डकप के फाइनल में प्रवेश कर लिया है। टीम ने गुरुवार को दूसरे सेमीफाइनल मैच में इंग्लैंड को 7 रन से हराया। टीम 2007, 2014, 2024 में भी फाइनल तक पहुंच चुकी है। मुंबई के वानखेड़े स्टेडियम में इंग्लैंड ने टॉस जीतकर गेंदबाजी चुनी। टीम इंडिया ने 20 ओवर में 7 विकेट खोकर 253 रन बनाए। 254 रन चेज कर रही इंग्लैंड की टीम 20 ओवर में 7 विकेट पर 246 रन ही बना सकी। जैकब बेथेल ने 48 बॉल पर 105 रन की पारी खेली। लेकिन, अपनी टीम को फाइनल में नहीं पहुंचा सके। भारतीय टीम की ओर से संजू सैमसन ने 89 रन की पारी खेली। जबकि शिवम दुबे ने 43 रन बनाए। ईशान किशन ने 39, हार्दिक पंड्या ने 27 और तिलक वर्मा ने 21 रन का योगदान दिया। इंग्लैंड से विल जैक्स और आदिल रशीद ने 2-2 विकेट झटके। एक विकेट जोफ्रा आर्चर को मिला। 2 बैटर्स रनआउट हुए।

भारत ने टी-20 वर्ल्ड कप में दूसरा सबसे बड़ा स्कोर बनाया

भारत ने टी-20 वर्ल्डकप में अपना दूसरा सबसे बड़ा स्कोर बना लिया। टीम इंडिया का सबसे बड़ा स्कोर रिकॉर्ड 256 रन है। जोकि टीम ने इस वर्ल्ड कप में जिम्बाब्वे के खिलाफ सुपर-8 मैच में बनाया था। ओवरऑल टी-20 वर्ल्ड कप में यह चौथा सबसे बड़ा स्कोर रहा। श्रीलंका के नाम टी-20 वर्ल्ड कप में हाईएस्ट टोटल का रिकॉर्ड है, टीम ने केन्या के खिलाफ 2007 में 260 रन बनाए थे।

इंग्लैंड की खराब शुरुआत, बेथेल का शतक बेकार

254 रन का टारगेट चेज कर रही इंग्लैंड की शुरुआत खराब रही। टीम ने पावरप्ले में 68 रन बनाने में टॉप-3 विकेट गंवा दिए थे। वरुण चक्रवर्ती ने जोस बटलर (25 रन), जसप्रीत बुमराह ने हैरी ब्रूक (7 रन) और हार्दिक पंड्या ने फिल सॉल्ट (5 रन) को पवेलियन की राह दिखाई।

बेथेल ने 50+ की दो साझेदारियां की

नंबर-4 पर बैटिंग करने उतरे जैकब बेथेल ने एक छोर से पारी संभाले रखी। उन्होंने 48 बॉल पर 105 रन बनाए। बेथेल ने 3 अहम साझेदारियां कीं। उन्होंने टॉम बैंटन के साथ चौथे विकेट के लिए 10 बॉल पर 31 रन, विल जैक्स के साथ 5वें विकेट के लिए 39 बॉल पर 77 और सैम करन के साथ छठे विकेट के लिए 27 बॉल पर 50 रन की साझेदारी की। लेकिन, 20वें ओवर की पहली बॉल पर रनआउट होने के बाद इंग्लैंड की टीम हार गई।

दोनों टीमों की प्लेइंग-11

भारत- संजू सैमसन (विकेटकीपर), अभिषेक शर्मा, ईशान किशन, सूर्यकुमार यादव, हार्दिक पंड्या, तिलक वर्मा, शिवम दुबे, अक्षर पटेल, अर्शदीप सिंह, जसप्रीत बुमराह और वरुण चक्रवर्ती।

इंग्लैंड - फिल सॉल्ट, जोस बटलर (विकेटकीपर), जैकब बेथेल, टॉम बैंटन, हैरी ब्रूक (कप्तान), सैम करन, विल जैक्स, लियम डॉसन, जैमी ओवरटन, जोफ्रा आर्चर और आदिल रशीद।